ज्ञानामृत मासिक

वर्ष 40, अंक 12, जून 2005, मूल्य 05.50

1. **अहमदनगर-** भारत के प्रधानमंत्री भ्राता मनमोहन सिंह जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. राजेश्वरी बहन । साथ में हैं ब्र.कु. दीपक भाई तथा ब्र.कु. सुप्रभा बहन । 2. **आबू पर्वत-** मूल्यों की शिक्षा तथा आध्यात्मिकता सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजस्थान की माननीया राज्यपाल बहन प्रतिभा पाटिल जी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, प्र.ब्र.कु.ई. विश्व विद्यालय, प्रो. प्रेम कुमार शारदा, पूर्व उपलकुलपति गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. निर्वैर भाई तथा अन्य ।

1. **कड़प्पा-** आन्ध्रप्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता सुशील कुमार शिंदे तथा मंत्री भ्राता एन. नरसिम्हा रेड्डी का अभिनन्दन करने के बाद ब्र.कु. बहनें उनके साथ । 2. **मुलुण्ड (महाड)-** मुम्बई उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता दिलीप भोंसले का अभिनन्दन करती हुईं ब्र.कु. हर्षा बहन । 3. **पानीपत-** हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. रमा बहन । साथ में हैं ब्र.कु.भारतभूषण भाई । 4. **रायगढ़-** उड़ीसा के विज्ञान, तकनीक, जल संसाधन मंत्री भ्राता रबिनारायण जी आध्यात्मिक झाँकी का उद्‌घाटन करते हुए । साथ में हैं ब्र.कु. जयन्ती बहन तथा ब्र.कु. सुरेन्द्र भाई । 5. **चण्डीगढ़-** सकारात्मक स्वास्थ्य चित्र-प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता आर.सी. डोगरा। ब्र.कु. कुसुम बहन तथा अन्य साथ में हैं । 6. **नवसारी-** गुजरात के आदि जाति विकास मंत्री भ्राता मंगु भाई पटेल को गुलदस्ता भेंट करती हुईं ब्र.कु. मृदुला बहन । 7. **ठाणे-** ब्र.कु. अमीरचन्द भाई का सत्कार करते हुए महापौर भ्राता विचारे जी । साथ में हैं उप-महापौर तथा अन्य नगरसेवक। 8. **धरान-** नेपाल के सूचना तथा संचार मंत्री भ्राता तक प्रसाद ढकाल जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. नानी मय्या बहन ।

– संजय की कलम से

जगदम्बा माँ की दिव्य पालना

साकार में बाबा की गद्दी कलकत्ते में थी। आपको मालूम है वहाँ तो दुर्गा की, शक्ति की पूजा बहुत होती है। बाबा साकार रूप में भी जानते थे कि कैसे भक्त लोग देवियों की, शक्तियों की पूजा करते हैं। अब वह साक्षात् देवी पृथ्वी पर है, सरस्वती मय्या ज्ञानवीणा बजाती है, वह धवल वस्त्रधारिणी, कमलपुष्प निवासिनी, हंस पर आरूढ़ जगत की अम्बा है। जिसको भक्त लोग प्यार से पुकारते हैं वो आज दुनिया में है, लोग उसको जानते नहीं हैं। बाबा ने कहा कि उसकी आरती करो, कर सकते हो ? जितनी थोड़ी बहुत मुझे ख्याल में थी, कोशिश की याद करने की, तो आरती की। मम्मा के सामने जाके लकड़ियाँ रख दीं और जैसे गुरुकुल के बालक प्रणाम करते हैं, हाथ जोड़कर, माथा झुका कर वैसे प्रणाम किया। जय जगदम्बे किया और उसके बाद आरती की। मम्मा भी हैरान हो गई। उस समय की मम्मा की वो सूरत और मूरत भूल नहीं सकती। वो कैसी सूरत और मूरत थी! जिसने देखी, वो धन्य हो गया।

मैंने जीवन में अनुभव किया, कितने विरोधी लोग आये, संस्था की उन्होंने ग्लानि की, संस्था को बुरा-भला कहा, बहनों के ऊपर बंधन डाले लेकिन मम्मा के सामने जब आते थे तो झुक जाते थे। वो यह मान जाते थे कि यह तपस्विनी है, योगिनी है और यह साक्षात् देवी है। यह मैंने स्वयं अनुभव किया। मैं समझता हूँ कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ! कई दफा गद्‌गद हो जाता है मन। रात को नींद टूट जाती है। वो मूरत मम्मा की और बाबा की सामने आ जाती है। सृष्टि के आदि पिता, प्रजापिता ब्रह्मा थे। सारी सृष्टि के प्रथम, जिनको सब धर्म वाले मानते हैं कि हमारे आदि पिता थे, उनके अंग-संग रहने का मौका मुझे मिला। उन्होंने अपने हाथ से प्यार और दुलार किया, अपने हाथों से मुझे भोजन खिलाया, बच्चों की तरह से प्यार किया, वो दिन कैसे थे! ओहो! मम्मा की गोद में हम जाते थे, कितने लोग अपना अनुभव सुनाते हैं, सिर्फ यह मेरा ही अनुभव नहीं। जब मम्मा की गोद में हम गये, हमें सुधबुध नहीं थी। हम कहाँ थे उस समय! वो कौन मम्मा थी जो हमें इतना प्यार कर रही थी! वो जगत की अम्बा, सरस्वती मय्या जिसको भक्त जन्म-जन्मान्तर याद करते हैं, जिसको विद्या की देवी मानकर उससे विद्या माँगते हैं, शीतलता के लिए शीतला देवी के रूप में उसका गायन करते हैं, उस संतोषी माता की गोद में हम थे, उसने हमारे सब पापों को हर लिया। हमें इतना शीतल कर दिया कि अब कोई प्रश्न ही नहीं उठता। हमको बहुत सहज-जैसा लगा पुरुषार्थ करना बाबा और मम्मा के संग से। ★★

अमृत-सूची

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	65/-	1,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	65/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	600/-	6,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	600/-	6,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है–सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

– शुल्क के लिए सम्पर्क करें–

09414423949, 09414154383

सम्पादकीय ....

मृत्यु-भय पर विजय

आज का मानव भय के साए में जी रहा है। बीमारी, वृद्धावस्था, लोक-लाज, गरीबी, धर्म की हानि, मान-इज्जत की हानि, प्राकृतिक प्रकोप तथा काल का वार – इन अनेक प्रकार की भयप्रद बातों की छाया हर समय उसके इर्द-गिर्द मंडराती रहती हैं। परंतु इनमें से सबसे भयानक है काल के वार का भय अर्थात् मौत का भय। मौत भयंकर नहीं है परंतु **उसका भय महाभयंकर है। मौत तो एक ही बार मारती है परंतु यह भय बार-बार मारता है।** शास्त्रों में दृष्टांत आता है कि एक बार धर्मराज ने मौत को दो हज़ार आदमी मारकर लाने का आदेश दिया। जब वह वापस लौटा तो उसके साथ चार हज़ार आदमी थे। जब जवाब मांगा गया तो मौत ने कहा – ''मैंने तो दो हज़ार ही मारे थे, शेष तो मरने से भयभीत होकर स्वयं ही मर गये और मेरे साथ-साथ चल दिए।'' इस घातक भय को जीतने वाला ही मृत्युंजय है।

क्या है मौत – मौत नाम डरावना है अत: परिवर्तन कहना अधिक उचित है। मौत माना कि शरीर को बनाने वाले पांच तत्वों तथा आत्मा ने अपने को स्थानान्तरित कर लिया। आचार्य श्री अवस्थी जी कहते हैं – 'मृत्यु होती ही नहीं, जीवन ही जीवन है। पर्त-दर-पर्त जीवन है। मृत्यु तो मात्र परिधान बदल देना है। वृक्ष भी बसन्त में पत्ते बदलते हैं। वृक्ष को भरोसा है इसलिए वह उदास नहीं होता। मानव को नए वस्त्र रूपी पत्तों के प्राप्त होने का ज्ञान और विश्वास नहीं इसलिए वह दुर्बल और दु:खी हो जाता है।' नया वस्त्र पहनना, नए घर में जाना, नए स्थानों पर रहना, नए लोगों से मिलना और नए अनुभव करना – हम सबको अच्छा लगता है ना! तो मृत्यु ये सब ही तो प्रदान करती है। अत: उसका स्वागत करो। उसे दिल से स्वीकार करो, उसके आगमन को नवीन तोहफे पाने का उत्सव समझो।

सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक आत्माओं द्वारा शरीर लेने और छोड़ने का क्रम निरंतर चला आ रहा है। इसलिए कहा जाता है कि मौत का समाचार दुनिया में सदा ताजा रहता है। एच०जी०वेल्स ने कहा है – 'इस दुनिया में जितने लोग अब तक आए, अगर उसका हिसाब लगाया जाये तो इस संसार में हर आदमी के पैर के नीचे दस आदमियों की मिट्टी है।' इस मिट्टी से, इससे बने शरीर से और साधनों से जिसको जितना ज़्यादा मोह है उसको उतना ही ज़्यादा मौत का भय है। जो मिटने वाली चीज़ के चिंतन, मनन और लगन में रहता है उसे हर समय स्वयं के मिटने का भय सताता रहता है। जो कभी न मिटने वाली अर्थात् अविनाशी सत्ता आत्मा के चिंतन, मनन और लगन में रहता है वह स्वयं को अविनाशी समझ हर परिस्थिति में खुशी की खुराक खाता रहता है। सुप्रसिद्ध वक्ता डॉ. दीपक चोपड़ा से, आबू में चल रहे उनके प्रवचन के दौरान किसी ने पूछा – 'मृत्यु के भय से कैसे बचें?' बहुत सुंदर उत्तर था उनका – 'नष्ट होने वाले शरीर के भान और अभिमान में रहेंगे तो मृत्यु का भय तो लगेगा ही लगेगा। न मरने वाली आत्मा की स्मृति में रहेंगे तो भय लग नहीं सकता। दूसरा, याद रखो, हर चीज़ सदा मरती रहती है। जैसे शाम के समय, सुबह मर गई और जब हम युवा हुए तो बचपन मर गया। इसी प्रकार नया जीवन मिला तो पुराना जीवन मर गया।'

मिलने वाली चीज़ का चिंतन करो, मिटने वाली का नहीं। जब किसी व्यक्ति के वस्त्र ढीले न होकर शरीर से चिपके हुए होते हैं तो उसे उतारने में कष्ट का अनुभव होता है और देर भी लगती है। इसी प्रकार, जब शरीर रूपी वस्त्र में बहुत ममता होती है तो व्यक्ति उससे सहज भाव से न्यारा नहीं हो पाता। शरीर-मोह में जकड़ा व्यक्ति अंतिम समय भी उस जकड़न से छूटने में भारी कष्ट महसूस करता है। आत्मा का साथ देने में असमर्थ बीमार,रोगी और वृद्ध शरीर भी अंत समय में मोह का पाश इस कदर कस लेता है कि आत्मा न सुख से जी पाती है और न मृत्यु के बाद प्राप्त होने वाले नवजीवन का वरण कर पाती है। अत: जीते जी

शरीर रूपी वस्त्र को इतना ढ़ीला छोड़ देना चाहिये कि आत्मा (योगाभ्यास द्वारा) जब चाहे इसमें प्रवेश कर सके और जब चाहे इसको छोड़ सके। एक बार एक सत्संग में एक वृद्धा ने कहा – मुझे इस बात का भय बहुत सताता है कि श्मशान में मुझे अकेला छोड़कर सभी लोग वापस चले जाएंगे और मैं वहाँ जंगली जानवरों के बीच कैसे रह पाऊँगी? सुनकर रहम भरी हंसी आई। हमने कहा – आप होंगी ही नहीं, आप तो विधाता के आगोश में समा चुकी होंगी। श्मशान में तो आत्मा पर चढ़ा यह छिलका या आवरण भर होगा। इसलिए अपने को आत्मा समझो और आवरण के भान का त्याग करो तो यह भय निकल जाएगा।

मृत्यु के सम्बन्ध में दो अति महान आत्माओं की व्यवहारिक प्रतिक्रिया मेरे नेत्रों के सामने साकार हो उठी है। पहली घटना है – महात्मा गांधी के जीवन की, उनके सामने जब कस्तूरबा शरीर छोड़ गई तो वे एकदम शान्त खड़े थे। चिता के पास खड़े पंडित ने आवाज़ दी – 'महात्मा जी, अंतिम दर्शन कर लो।' 'अंतिम दर्शन' यह शब्द उनको चोट की तरह लगा। जब कफन को पकड़ा तो उनके हृदय से आवाज़ निकली – ''कस्तूरबा, क्या मैं तुम्हारे आखिरी दर्शन कर रहा हूँ? मैं तुम्हें राख होता हुआ नहीं देख सकता'' ऐसा कहते-कहते उनकी हिचकियाँ बंध गईं। उन्हें संभालना मुश्किल हो गया। एक अखबार ने उनके लिए लिखा – 'आज हिमालय हिचकी भर रोया।' बड़ी-बड़ी आँधियों को झेलने वाले, हिमालय की तरह अडिग रहने वाले गांधी जी भी उस समय हिल गये। दूसरी घटना है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के साकार जीवन की। वे हीरे-जवाहरात के सुप्रसिद्ध व्यापारी थे। सन् 1936-1937 में उनके तन में परमात्मा शिव की प्रवेशता हुई और उन्होंने अपना तन, मन, धन, जन सब समर्पण कर, परमात्मा के आदेशानुसार विश्व परिवर्तन के निमित्त ज्ञान-यज्ञ की स्थापना की। दादा लेखराज की लौकिक युगल का नाम जसोदा था। वे भी प्यारे बाबा के समर्पण के समय परिवार के अन्य सदस्यों के साथ यज्ञ में समर्पित हो गई। उन्होंने इस यज्ञ सेवा में हड्डी-हड्डी लगाई। जब उन्होंने शरीर छोड़ा तो वे आबू से बाहर थी। प्यारे बाबा को समाचार मिला तो बाबा की प्रतिक्रिया यही रही – **'अम्मा मरे तो हलुआ खाओ, बीबी मरे तो हलुआ खाओ।'** ब्रह्मा बाबा ने नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा होने का पूर्ण सबूत इस एक महावाक्य में दे दिया। उन्होंने परमात्मा शिव पर अपने को इतना समर्पित कर दिया था कि उनका निज देह के प्रति आकर्षण पूरी तरह मिट गया था तो दूसरे की देह की स्मृति और आसक्ति का तो प्रश्न ही नहीं था। उनका संपूर्ण स्नेह अविनाशी आत्मा से रहा और आत्मा कभी मरती नहीं है तो दु:ख किस बात का?

पिताश्री स्वयं तो ऐसे बने ही, साथ-साथ उन्होंने मोहजीत बच्चों की एक विशाल सेना भी तैयार कर दी। वे कहते थे कि नई दुनिया का निर्माण वही कर सकता है जो पुरानी दुनिया की किसी भी चीज़ में आसक्त न हो। ये शरीर तो पुराने और तमोप्रधान हैं, इनको याद करना तो भूतों को याद करना है। अत: याद करना है उस विदेही को जो जन्म-मरण रहित, सर्व-सुखों का दाता और स्वर्ग का रचयिता है। प्यारे बाबा के ऐसे पारदर्शी जीवन का अनुकरण करने वाले हजारों ब्रह्मावत्स आज, उनके अव्यक्त होने के बाद भी उनके द्वारा प्रारंभ किए कार्य को, उन्हीं के नक्शे-कदम पर चलकर सम्पूर्णता की मंजिल की ओर तीव्र गति से अग्रसर कर रहे हैं। देह के प्रति आसक्ति को जीत लेना ही विकारों के किले को फतह करना है। सृष्टि के आदिकाल में अर्थात् सतयुग में हर आत्मा नष्टोमोहा थी। इसी कारण वहाँ मृत्यु उत्सव था। हर जाने वाले को सुमधुर गीत-संगीत की ध्वनि तथा सज-धज के साथ विदाई दी जाती थी और उसी प्रथा का अनुकरण करते हुए आज भी वृद्ध लोगों की अर्थी को सजाया जाता है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है – 'काशी में मृतक को ले जा रहे थे, नृत्य करते, गीत गाते।' आज भी काशी में, चिर विदाई प्रीति पूर्ण और उत्सवपूर्ण देखने को मिल जाती है। जाने वाले को रो-धोकर वापस बुलाना,

उलझाना अच्छा नहीं। इसलिए मृत्यु रूपी उत्सव आनन्दपूर्ण हो, फिर चाहे यह अपना हो या दूसरे का।

मृत्यु का भय जीतने की युक्तियाँ

1. पिता का घर ही अपना घर – हम सभी भगवान के घर से इस सृष्टि पर आए हैं। तो जहाँ से आए हैं वहाँ वापस अवश्य लौटना है। पिता के पास जाने के क्षण सुखद होते हैं, दुखद नहीं।

2. शरीर, धर्म की साधना के लिए है – जैसे कोई गाड़ी खरीदता है और उससे कमाई करता है, उसी प्रकार यह शरीर रूपी गाड़ी पुण्य की कमाई के लिए है। बहुत कमाई करने पर यदि गाड़ी बेकार हो जाए तो व्यक्ति अपनी कमाई देखकर खुश होता है, न कि बेकार गाड़ी को देखकर दु:खी होता है। इसी प्रकार शरीर रूपी गाड़ी से हम पुण्य की हर पल इतनी कमाई जमा करें कि इस गाड़ी के नष्ट होने पर भी इससे की गई कमाई से मन प्रसन्नता का अनुभव करता रहे।

3. जीते-जी शरीर से न्यारा रहने का अभ्यास – कहा जाता है कि जो व्यक्ति जीते जी ही शरीर से न्यारे होकर घर परमधाम जाने के अभ्यासी हो जाते हैं उन्हें मृत्यु एक खेल ही नज़र आता है। वे हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझते हैं। उनकी आत्मस्थिति इतनी परिपक्व होती है कि उन्हें संसार असार ही नज़र आता है। वस्तु, व्यक्ति, वैभव पर उनकी नज़र गर्म तवे पर पड़ी बूंद की तरह ठहरती ही नहीं है। वे हर श्वास, संकल्प को सफल करते जाते हैं। वे अपने को अकालमूर्त की संतान मास्टर अकालमूर्त समझते हैं। उनका हर कर्म परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमत प्रमाण होता है। अत: मृत्यु उन्हें वरदान समान लगती है। देह रूपी पिंजरे से मुक्त होने का क्षण उन्हें बड़ा सुखदाई लगता है।

4. शरीर कर्मजन्य है – इस शरीर का जन्म कर्मों के हिसाब-किताब के अनुसार हुआ है। जब आत्मा के, इसको आधार बनाकर किए जाने वाले लेन-देन के हिसाब समाप्त हो जाते हैं तो यह शरीर भी समाप्त हो जाता है। अत: कर्मों की अधीनता से बनने वाले शरीर से क्या मोह! मोह में तो व्यक्ति अंधा हो जाता है। आत्मिक प्रेम उसे तीसरा नेत्र प्रदान करता है। तो क्यों न नश्वर शरीर के मोह में अंधा होने की बजाए हम अविनाशी आत्मा के स्नेही बन तीसरा नेत्र प्राप्त करें।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

ओ प्यारी माँ जगदम्बा

– ब्रह्माकुमार मनोज 'खुशनुमा', नोएडा

ओ प्यारी माँ ! ओ जगदम्बा ! तेरे प्यार को जब हम याद करें।
लौट आएं वो दिन फिर से, मन-ही-मन फ़रियाद करें।।

शिव-शेरनी-शक्ति-कल्याणी, पर मधुर, सरस, प्यारी वाणी,
और शीतल-सी चितवन तेरी, ज्यों चाँद चमकता रूहानी,
वो बातें तेरी याद करें, जो दिल में नवीन उत्साह भरें।
ओ प्यारी माँ ! ओ जगदम्बा !

शिव परमपिता ने खुद तुमको, जग-जननी का सत्कार दिया,
इतनी छोटी-सी आयु में, सबको माता का प्यार दिया,
बालक-बूढ़े, खुद बाबा भी, सब 'मम्मा' तुमको कहा करें।
ओ प्यारी माँ ! ओ जगदम्बा !

जिह्वा से करें महिमा कैसे ? सारे कल्प में बेमिसाल हो तुम,
'हाँ जी,बाबा' का मंत्र लिए, अविनाशी यज्ञ-मशाल हो तुम,
है प्यार बहुत, पर शब्द कहाँ, अर्पण दिल-दर्पण कैसे करें ?
ओ प्यारी माँ ! ओ जगदम्बा !

पुरुषोत्तम संगमयुग और समय की संकीर्णता

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

यह सृष्टि-चक्र 5000 वर्ष का है, हर 5000 वर्ष बाद इसकी हूबहू पुनरावृत्ति होती है। जैसे रात और दिन के बीच ऊषाकाल होता है तथा दिन और रात के बीच संध्याकाल होता है, उसी प्रकार एक चक्र की समाप्ति और दूसरे चक्र के शुभारम्भ के संधिकाल को संगमयुग कहा जाता है। यह संगमयुग सारे कल्प में सर्वश्रेष्ठ समय है। इसी संगमयुग समय पर हम श्रेष्ठ कर्म करके पुरुषोत्तम बन सकते हैं और श्रेष्ठ पद के अधिकारी बन सकते हैं इसलिए संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। सारे कल्प में संगमयुग ही आत्मा और विश्व की चढ़ती कला का समय है।

संगमयुग की एक विशेष बात जो हम आत्माओं को परमपिता परमात्मा द्वारा पता पड़ी है, यह है कि संगमयुग सारे कल्प का संकीर्ण (सार) स्वरूप है। उदाहरणार्थ कैमरे में 35 मिलीमीटर की एक स्लाइड होती है, जो देखने में बहुत छोटी होती है। उसमें सारी फिल्म का सार समाया होता है। जब सिनेमा के बड़े पर्दे पर उसका विस्तृत रूप देखते हैं तो पता पड़ता है कि स्लाइड में, पर्दे पर उभरे हुए प्रतिबिम्ब का ही संकीर्ण (सार) स्वरूप है। इसी तरह 5000 वर्ष में होने वाली समस्त घटनाओं का संकीर्ण स्वरूप यह संगमयुग है। ज्ञान सागर शिव बाबा ने भी कहा है कि सारे कल्प के विधि-विधानों, रीति-रिवाजों का बीज इस संगमयुग पर पड़ता है। इस प्रकार, इस संगमयुग को समझने से हम सारे सृष्टि-चक्र के इतिहास को समझ सकते हैं। ऐसा दृष्टिकोण अन्य धर्म-स्थापकों व इतिहासकारों की बुद्धि में नहीं है और भला हो भी कैसे सकता है क्योंकि रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तो रचता में ही हो सकता है, रचना में नहीं। हम आत्मायें त्रिकालदर्शी तो नहीं बने हैं और न हो सकते हैं परन्तु संगमयुग पर होने वाली बातों पर अगर अच्छी रीति विचार करें और समझें तो हम तीनों कालों को जानने वाले मास्टर त्रिकालदर्शी बन सकते हैं। साधारण गणित का हिसाब करें और सृष्टि-चक्र के 5000 वर्षों को संगमयुग के लगभग 100 वर्षों से विभाजित करें तो हर घटना संगमयुग में दिखाई देने वाली घटना से 50 गुणा बड़ी हो जायेगी। हम साक्षी होकर अपने आपको और अन्य आत्माओं को देखें तो पता पड़ता है कि द्वापर-कलियुग में हमारा और उनका स्वभाव और व्यवहार कैसा होगा, उसकी संक्षिप्त जानकारी हमको संगमयुग में अनुभव होती प्रतीत होती है। मैं और मेरे-पन के जो संस्कार हैं, वे अभी भी छोटे-मोटे रूप में स्व-उन्नति और सेवा में विघ्न रूप बनते ही हैं। वे ही बातें द्वापर-कलियुग में कैसा कड़ा रूप धारण करेंगी, यह बात भी विचारणीय है। कहीं ऐसा न हो कि उसी के कारण परस्पर संघर्ष, रक्तपात या खानाखराबी हो जाये। हम यह भी जानते हैं कि भविष्य की हर बात की कलम अभी लग रही है। सतयुग-त्रेतायुग की जो कलम लग रही है, वह तो सुखदायी ही होगी परन्तु द्वापर-कलियुग की कलम कभी-कभी दु:खदायी भी हो सकती है। इसी संदर्भ की एक घटना का वर्णन मैंने पवित्र धन के लेख में किया था, उसे दोहरा रहा हूँ। मुम्बई में कोलाबा सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका दादी पुष्पशान्ता जी थीं, उनको उनके लौकिक सम्बन्धियों से कोलाबा सेवाकेन्द्र का एक फ्लेट सौगात में मिला था, जो ट्रस्ट के नाम पर है। दादी पुष्पशान्ता जी की लौकिक बेटी सुशीला गृहस्थ जीवन में थी परन्तु बाद में उन्होंने संन्यास धारण किया और अपनी सम्पत्ति का एक ट्रस्ट बनाना चाहा। वह संन्यास धारण करने के कारण अपने गुरु के साथ सेवा

के लिए अनेक स्थानों पर जाती रहती थीं, इसलिए उसने इच्छा प्रगट की कि उस ट्रस्ट का रजिस्टर्ड ऑफिस कोलाबा सेवाकेन्द्र पर रहे। दादी पुष्पशान्ता जी के कहने पर मैंने ब्रह्मा बाबा को उस सम्बन्ध में पत्र लिखा और पूछा – बाबा, क्या उनके ट्रस्ट का रजिस्टर्ड ऑफिस अपने सेवाकेन्द्र पर हो सकता है? प्यारे ब्रह्मा बाबा ने भी मेरी परीक्षा ली और पूछा – बच्चे, तेरी क्या राय है। मैंने अपना विचार ब्रह्मा बाबा को लिखा कि यह कैसे हो सकता है। उनके विचारों और अपने विचारों में बहुत अन्तर है, इसलिए छुट्टी नहीं दे सकते हैं। तब ब्रह्मा बाबा ने लिखा कि बच्चे, आप त्रिकालदर्शी होकर सोचना और निर्णय करना। द्वापरयुग से जो अन्य धर्म स्थापन होंगे, उनका आश्रयदाता तो देवी-देवता धर्म ही होगा अर्थात् देवी-देवता धर्म के थुर से ही अनेक धर्म रूपी शाखाएँ निकलेंगी अर्थात् उनकी कलम लगेगी। पहले तो उनका आपके साथ सौजन्यपूर्ण व्यवहार होगा, बहुत समय के बाद में मतभेद हो सकता है। इसलिए उस बच्ची को अपने ट्रस्ट का रजिस्टर्ड ऑफिस कोलाबा सेवाकेन्द्र पर बनाने की छुट्टी दे दो। आगे चलकर कई ऐसे प्रसंग और बातें आयेंगी जिनके विषय में आप बच्चों को वर्तमान में त्रिकालदर्शी होकर भविष्य के लिए सोचना होगा क्योंकि आप बच्चों के सम्बन्ध-सम्पर्क से ही उनकी कलम लगेगी। इसलिए हमारे बुद्धिजीवी भाई-बहनों से मेरा आग्रह है कि वे योग में संगमयुग के इस संकीर्ण एवं भविष्य के विस्तृत स्वरूप पर परमपिता परमात्मा के साथ यदि रूह-रूहान करें तो आने वाले भविष्य की अनेक घटनाओं की न केवल जानकारी होगी किन्तु उनका साक्षात्कार भी हो सकता है।

संगमयुग, पिछले 63 जन्मों के विकर्मों का हिसाब-किताब योगबल या कर्मभोग के द्वारा चुक्ता करने का समय है। यह हिसाब-किताब परमात्मा की मदद से शूली से काँटा हो जाता है। उदाहरणार्थ पहले अहमदाबाद में के.एम. चौक्सी नाम के एक डॉक्टर थे, जो बहुत ही अच्छे थे और हमारे जो भी भाई-बहनें अहमदाबाद जाते थे, उनका वे बहुत ही अच्छी रीति से शारीरिक इलाज करवाते थे। एक बार उन्होंने प्यारे ब्रह्मा बाबा को एक पत्र लिखकर पूछा कि बाबा, ये बहनें तो बहुत अच्छी पुरुषार्थी और श्रेष्ठ योगी हैं परन्तु इनको ये बीमारियाँ आदि क्यों होती हैं? उनकी बीमारी योग से दूर क्यों नहीं हो जाती है? तब त्रिकालदर्शी शिव बाबा ने प्यारे ब्रह्मा बाबा के द्वारा उनको उत्तर दिया कि बच्चे, इन आत्माओं का पिछले 63 जन्मों के अनेकानेक विकर्मों का फल संचित है जिसके दण्ड रूप में इन्हें कर्मभोग भोगना पड़ता है। वह बाबा के वरदानों और इनके ज्ञान-योग के पुरुषार्थ के आधार पर शूली से काँटा तो हो जाता है लेकिन कर्म के अविनाशी विधान के अनुसार हर आत्मा को अपने विकर्मों के फलस्वरूप शूली से काँटे समान बने दण्ड को अनुभव करना ही है। इसलिए योग की अवस्था के साथ इन बीमारियों का कोई सम्बन्ध नहीं है।

स्लाइड्स और सिनेमा के पर्दे के विषय में जो पहले कहा गया है उस अनुसार शूली से काँटे के समान बने कर्मभोग को 5000 वर्ष के रंगमंच पर देखें तो पता चलता है कि वास्तविक रूप में वे बातें कितनी बड़ी रही होंगी। दैवी परिवार की एक आत्मा ने सन् 1963 में शरीर छोड़ा। शरीर छोड़ने से पहले वह तीन दिन बेहोश रहा था। बाद में उनकी आत्मा एक संदेशी बहन के तन में आई तब उनसे उन तीन दिन का अनुभव पूछा गया तो उस आत्मा ने बताया कि मैंने बीमार होने से पहले शिव बाबा से इच्छा प्रकट की थी कि मुझे धर्मराजपुरी में नहीं जाना है और आप मुझे एडवांस पार्टी में भेज रहे हैं। वहाँ मैं ज्ञान-योग के द्वारा अपने रहे हुए हिसाब-किताब को भस्म नहीं कर सकता हूँ इसलिए आप मेरे शरीर

छोड़ने से पहले 63 जन्मों के मेरे सारे हिसाब-किताब चुक्ता करा कर ही मुझे आगे भेजना। शिव बाबा ने मेरी इच्छा पूरी की, मुझे तीन दिन में पिछले सभी विकर्मों की अनुभूति करा कर पश्चाताप रूपी दण्ड का अनुभव कराया। जब मेरा सारा कर्मभोग पूरा हुआ तब ही मेरा शरीर छूटा और अब मैं पिछले विकर्मों के बोझ से बिल्कुल हल्का हूँ और एडवांस पार्टी में जा रहा हूँ। इससे पता चलता है कि शिव बाबा हम बच्चों की कितनी संभाल करते हैं और बड़े कर्मभोग को भी कितनी सहज रीति से शूली से काँटा कर देते हैं। इस घटना को जानकर हम सभी ऐसा दृढ़ संकल्प करें कि हमको विनाश के समय धर्मराजपुरी में जाने की आवश्यकता न हो और हम सीधा ही परमधाम जायें। ऐसी बहुत कम शक्तिशाली आत्मायें होंगी, जो सीधा ही परमधाम जायेंगी। इसी संदर्भ में एक और विचित्र अनुभव मैंने किया। मैं एक बार क्लास करा रहा था, उसमें मैंने यही समझाया कि हम ऐसा पुरुषार्थ करें जो हम धर्मराजपुरी में जाये बिना सीधा ही परमधाम में जायें क्योंकि धर्मराजपुरी की सजा अनुभव करना भी हमारे ऊपर एक प्रकार का दाग है। बहुत समझाने के बाद मैंने क्लास से पूछा, आप धर्मराजपुरी में जाये बिना ही परमधाम जाना चाहते हैं या किसी की धर्मराजपुरी में जाने की इच्छा है? तब एक भाई उठा और बोला कि मेरी धर्मराजपुरी में जाने की इच्छा है। उसने कहा कि मैं जानता हूँ कि संगमयुग पर ऐसा पुरुषार्थ करना चाहिए जो धर्मराजपुरी में न जाना पड़े परन्तु मेरी इच्छा है कि मैं धर्मराजपुरी को देखूँ। मैंने जब दुनिया के अनेक देश देखे तो क्यों न मैं धर्मराजपुरी को भी देखूँ। दूसरी बात उसने कही कि मैंने ब्रह्मा बाबा तथा अनेक महारथी भाई-बहनों को साकार में नहीं देखा है और वे महारथी भाई-बहनें ब्रह्मा बाबा के साथ वहाँ धर्मराजपुरी में ट्रिबुनल में जज के रूप में होंगे ही, तो उनको साकार रूप में न सही पर सूक्ष्म रूप में देखने की इच्छा तो पूरी होगी। इस प्रकार उस आत्मा ने अपना लक्ष्य बताया कि वह संगमयुग पर पूरा ही पुरुषार्थ करके विकर्म विनाश करना चाहता है परन्तु किसी थोड़ी-सी बात के लिए धर्मराजपुरी में चक्र लगाने की इच्छा रखता है।उसकी यह बात सुनकर मुझे महाभारत की बात याद आई कि सत्यवादी युधिष्ठिर को भी एक छोटी-सी बात के कारण धर्मराजपुरी में चक्कर लगाने जाना पड़ा था।

हमारे कई भाई-बहनें संगम के दिनों की गिनती करते हुए सोचते हैं कि यह कब पूरा होगा? मेरे ख्याल से उनका उत्तर शिव बाबा ने दिया है। बाबा ने कहा है – मुझे तो तुम बच्चे अभी संगमयुग पर ही मिले हो, क्या तुम बच्चों को मेरा साथ पसंद नहीं है, जिस कारण तुम सोचते हो कि संगमयुग जल्दी समाप्त हो। परमपिता परमात्मा के साकार, आकार और निराकार स्वरूप का देव-दुर्लभ सुखद् अनुभव अभी संगमयुग पर ही होता है इसलिए संगमयुग बहुत-बहुत-बहुत महान है। द्वापर से तो परमात्मा का दिव्य साक्षात्कार ही होगा। फिर हम ऐसा संकल्प क्यों करें कि यह संगमयुग कब समाप्त होगा। दूसरी बात, संगमयुग समाप्त हुआ माना हमारा पुरुषार्थ करने का समय भी समाप्त हुआ, फिर तो हमने जो पुरुषार्थ किया होगा, उस अनुसार ही प्रालब्ध मिलेगी। तीसरी बात, संगमयुग ही मुक्ति-जीवनमुक्ति के यथार्थ अनुभव का समय है क्योंकि मुक्तिधाम में मुक्ति का अनुभव ही नहीं होगा और जीवनमुक्ति में भी जीवनबन्ध का ज्ञान नहीं होगा, इसलिए ज्ञान सहित मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अति श्रेष्ठ है। इस प्रकार संगमयुग की महानता और प्राप्ति को ध्यान में रखकर इसके सुख का अनुभव करें और शुभ संकल्प करें कि संगमयुग जितना समय चले, उतना अच्छा है। ❑

आदि देवी ने मुझे 'कवि' नाम दिया

– ब्रह्माकुमार देवीचन्द कौशिक, उत्तम नगर (दिल्ली)

मैं सन् 1960 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में आया। उस समय इसका रूप बहुत छोटा था। सेवाकेंद्रों की संख्या 40 के लगभग थी। लोगों के मन में बहुत भ्रांतियाँ थीं तथा उनका रुख़ विरोधात्मक था। लेकिन जो व्यक्ति एक बार भी विद्यालय के तथा यहाँ के भाई-बहनों के नजदीक संपर्क में आ जाता था, उस पर श्रेष्ठ विचारों तथा आत्मीय स्नेह की गहरी अलौकिक छाप लग जाती थी। विद्यालय के पाठ्यक्रम में जब वह इस प्रकार की बातें सुनता था कि भारत के देवी-देवताओं का जीवन पूर्ण सतोप्रधान, सर्वगुणसंपन्न तथा संपूर्ण निर्विकारी था, यहाँ का आदिकालीन धर्म, संस्कृति तथा दिव्य जीवन सर्वोच्च था, आदिकालीन भारत सर्वांगीण रूप से विकसित था तो ये नई और तर्कसंगत बातें उसके मन को छू लेती थीं और वह आनंदित होता था। भारतीयता के गर्व से उसका सीना फूल जाता था। परंतु दूर बैठे लोग, सुनी-सुनाई बातों और मनोमालिन्य के कारण तथा रूढ़िवादिता के प्रभाव से विद्यालय की महानता को जानने से वंचित रह जाते थे।

मैंने पाँच दिन का ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स किया ही था कि दिल्ली में मातेश्वरी जी का पदार्पण हुआ। उनकी दिव्य आभा, योगयुक्त चितवन तथा हृदयस्पर्शी वचन सुनकर मैं गद्गद हो गया। ममता भरा उनका मातृ स्नेह, तीर की तरह अचूक निशाने पर लगने वाली उनकी अधिकारपूर्ण वाणी तथा सरलता के साथ आत्मा-परमात्मा के गुह्य ज्ञान से भरा उनका प्रवचन सुनकर मेरा कवि हृदय फूट पड़ा। मुझे मातेश्वरी जी का तथा अन्य सभी दैवी भाई-बहनों का बहुत-बहुत स्नेह मिला। फिर तो मैं प्रतिदिन उनके प्रवचन के पश्चात् कविता सुनाता और उनकी अलौकिक शीतल गोद का आनंद पाता। मम्मा मुझे ''कवि'' नाम से बुलाती और पूछती कि आज क्या कविता बनाई है? मैं जल्दी ही इस दैवी परिवार में सभी के लिए ''कवि'' नाम से प्रसिद्ध हो गया।

उन दिनों हापुड़ में संस्था का बड़ा विरोध था। दो-तीन बार मेरा वहाँ जाना हुआ और मैंने यह अनोखा अनुभव प्राप्त किया कि **विघ्न-विनाशक प्रभु ने इतने बड़े विघ्न को समाप्त कर कैसे मार्ग साफ कर दिया।** मैंने ज्ञान देने के लिए, बाबा की प्रेरणा से कैनवास पर एक विशाल कल्पवृक्ष का चित्र बनवाया। मैं उसे दिखाने बाबा के पास मधुबन आया। बाबा बड़े खुश हुए और बोले – बच्चे, इसे मुंबई ले जाओ। यह तो अंधों के आगे आईना है। मैंने सरकारी नौकरी से पाँच दिन की छुट्टी
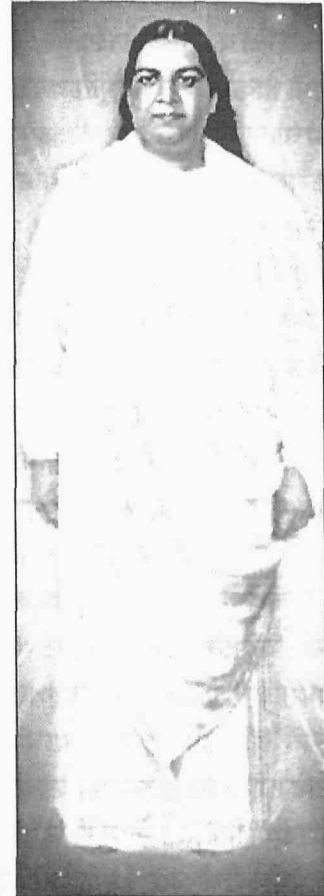
ली और रवाना हो गया। लेकिन मुंबई-पूना में 35 दिन लग गये। दिल्ली आने पर मैंने लोगों को यह कहते सुना कि इसकी नौकरी अब गई कि गई। परंतु कमाल प्यारे बाबा की, जो मेरा बाल भी बाँका नहीं हुआ। प्यारे बाबा ने असंभव को भी संभव कर दिखाया। उस झाड़ के चित्र के साथ मैं कानपुर, कोलकाता, श्रीनगर, गुजरात, पटना आदि अनेक स्थानों पर गया। एक बार मैं चेन्नई गया लेकिन किसी भूल के

कारण कल्पवृक्ष दिल्ली में ही रह गया। तब उसे एक भाई के साथ हवाई जहाज़ में भेजा गया। एक अन्य भाई ने हँसकर कहा – ''फ़ौजी ट्रेन में और उसकी बंदूक हवाई जहाज़ में सफर कर रही है।'' मैं पाई-पाई का हिसाब बाबा को भेजता था। हर कार्य पूछकर करता था। दीदी मनमोहिनी, जिनके मैं बहुत निकट था, को संबोधित करके बाबा कहते थे – **दीदी, यह घर में रहने वाला मेरा समर्पित बच्चा है।** सैकड़ों बार बाबा-मम्मा की अलौकिक गोद व आलिंगन का अनुभव करके मैं सोचता कि वह परम और सर्वशक्तिवान परमात्मा कैसे साधारण लोगों को प्यार बाँटता है। अनुभव कहता है कि एक ओर जहाँ धर्म-ग्लानि, कर्मभ्रष्टता तथा दुराचार चरम पर है, वैर-विरोध, दुःख-अशांति, आतंकवाद से मनुष्य त्राहि-त्राहि कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर श्रेष्ठ समाज, श्रेष्ठ राज्य और दैवी संस्कृति की कलम लग रही है। संस्था भोगवाद की धारा को योगवाद की ओर मोड़ने का श्रेष्ठतम व साहसपूर्ण कार्य कर रही है। संस्था के द्वारा दिनचर्या में अनुशासन, श्रेष्ठ संस्कारों में दृढ़ता आने से समय, शक्ति और धन का सदुपयोग हो रहा है। परिवार में शांति सहमति से, सुख-संतोष भरा वातावरण बन गया है। **गृहस्थ व आश्रम के संस्कार एक होकर गृहस्थाश्रम बनते जा रहे हैं।**

आज पश्चिम का अंधानुकरण हो रहा है। अश्लीलता सड़कों पर नाच रही है, अखबार, मैगज़ीन तथा होटलों में परोसी जा रही है। उपभोक्तावाद व औद्योगीकरण के कारण जहाँ नारी की गरिमा, उसका गौरव रसातल में जा रहा है वहीं दूसरी ओर संस्था ने नारी को पवित्रता के शिखर पर स्थापित किया है। सतोप्रधानता के संस्कारों और दैवीगुणों से शृंगार करके उसे पुनः एक आदर्श नारी बनाया है। उसमें देवत्व सजाया है। आदर्श नारी ही श्रेष्ठ व स्वस्थ समाज तथा सर्वांगीण विकसित राष्ट्र की नींव है। ★

आत्मन्! चली आओ

– ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

उठो और उठाओ, मानस पटल को अटल बनाओ।
यह खुश रहने-रखने का मौसम है आत्मन् चली आओ!!

आबू अब्बा के घर उड़के आने का मौसम है।
आमंत्रण है, मन-नियंत्रण का निमंत्रण है।।

न हो दिक् भ्रमित, न भटक, न अटक, न लटक कहीं।
है राह सीधी-सरल मंजिलोन्मुखी, संशय को दे झटक यहीं।।

न उलझ बस! तू सुलझ, समस्या विकट उधर, तो समाधान इधर है।
रोग उधर तो निदान इधर है, सकारात्मक आदान-प्रदान इधर है।।

आबू अब्बा के घर आने की देर भर है।
परिणाम फिर सुखद-सुफल ताउम्र भर है।।

हर गोष्ठी-संगोष्ठी, सम्मेलन हर वर्गीय को निमंत्रण है।
जटिल विषय उधर, तो निर्दोष सहज आख्यान इधर है।।

व्यर्थ नहीं यह जीवन, हो सकता बड़ा समर्थ है।
बचाए अनिष्ट से, मिलाए इष्ट से, सफल-सा अर्थ है।।

पाए अभिष्ट को तो तदबीर की ताकीद इधर है,
जागो और जगाओ, अन्तर्मन को सुजाग बनाओ।
अज्ञान नींद से जागने का मौसम है आत्मन्! चली आओ।।

प्रायःलुप्त हो चुके भाव जो, उन्हों की अनुभूति का मौसम है;
निर्जीव को करो सजीव, करो दुःखियों पर रहम।
सच्चे हरिद्वार चले आओ, छोड़ के वहम-अहम्।।

प्रभु संदेश देने-दिलाने का यह मौसम है।
आबू अब्बा के घर आने का मौसम है।। ❑❑

'पत्र' सम्पादक के नाम

प्रश्न – ब्रह्माकुमारी संस्था संसार को अच्छा बनाने के प्रयास में पिछली आधी शताब्दी से भी ज़्यादा समय से लगी हुई है, फिर भी बुराइयाँ घटने के बजाए बढ़ती जा रही हैं, आपके अच्छे कार्यों का प्रभाव क्यों नहीं पड़ रहा?

उत्तर – यह संसार वर्तमान समय एक निर्णायक मोड़ पर पहुँचने ही वाला है। वह निर्णय होगा सतोगुणी प्रवृत्तियों और तमोगुणी प्रवृत्तियों के बीच। जिस प्रकार चुनाव से पहले सभी पक्ष अपनी-अपनी स्थिति मजबूत बनाने में लगे रहते हैं परन्तु चुनाव का निर्णय हो जाने पर विजयी को कार्यभार सौंप कर शेष सभी मैदान से हट जाते हैं। उसी प्रकार वर्तमान समय परोपकार, सद्भाव, पवित्रता तथा सभी प्रकार के मूल्यों और त्याग-तपस्या-सेवा के बल से अच्छाई अपनी शक्ति बढ़ा रही है। दूसरी तरफ हिंसात्मक कार्यवाहियों, भ्रष्टाचार, बलात्कार, पापाचार, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार तथा अन्य नकारात्मक वृत्तियों को फैला-फैला कर बुराई भी अपना पक्ष मजबूत कर रही है। महाभारत के यादगार युद्ध में भी दिखाते हैं कि कौरव छल, दगा, धोखा, घमण्ड, निर्दयता, अपमान, अत्याचार, शोषण के बल से अपने राज्य को, सम्पत्ति को, सेना को बढ़ाने में लगे हुए थे और दूसरी तरफ थोड़े-से पाण्डव भी ईश्वरीय छत्रछाया में, एक बल एक भरोसे से, श्रीमत पर चलते हुए अपने तप, त्याग, तेज, मनोबल और योगबल को बढ़ा रहे थे। आखिर निर्णायक युद्ध हुआ और प्रीतबुद्धि पाण्डवों की जीत हो गई और विपरीत बुद्धि कौरवों का, कुल सहित नामोनिशान मिट गया। इसी प्रकार अब भी, बहुत शीघ्र महापरिवर्तन की प्रलयंकारी घड़ी आने वाली है जिसमें पाप स्वयं पाप को खा जायेगा अर्थात् बुराई के व्यापार में लगे लोगों को उनकी बुराई ही भस्म कर देगी और अच्छाई की स्थापना में लगे लोगों का बाल भी बाँका नहीं होगा। इस महापरिवर्तन के बाद **बुराई समूल नष्ट हो जाएगी और विश्व पर अच्छाई का एकछत्र राज्य स्थापित होगा जिसे हम स्वर्ग, बहिश्त, देवयुग आदि नामों से याद करते हैं।** जो आदमी उस युग में जाने के लिए विजय का तिलक लगवाना चाहता है **वह अभी से काम-क्रोध-लोभ रूपी शत्रुओं से मुख मोड़कर, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, धैर्य आदि सद्गुणों को जीवन में धारण करने में लग जाए।**

★★

अहंकारी मनुष्य बांस के समान

कहावत प्रसिद्ध है कि अहंकारी मनुष्य तो बांस के वृक्ष की तरह होता है जो न फल देता है, न अपनी छाया से शीतलता ही पहुँचाता है, बल्कि सीधा अकड़ कर खड़ा रहता है। नम्र मनुष्य ऐसे वृक्ष के समान होता है जो फल लगने से झुकता है, दूसरों को अपने रसदार फलों से तथा शीतल छाया से लाभान्वित करता है और सुख देता है। यह सर्व-विदित है कि बांसों के परस्पर टकराने से आग पैदा हो जाती है और कई बार वह आग सारे जंगल को अपनी लपेट में ले लेती है। इसी प्रकार दो अहंकारी मनुष्यों का भी अहंकार जब आपस में टकराता है तो क्रोध रूपी ज्वाला अथवा अशान्ति रूपी अग्नि पैदा होती है और उस सूक्ष्म अग्नि के दाह से तो कई बार सारा कुटुम्ब अथवा देश भी दुःखी होता है। बांसों के टकराने से पैदा हुई अग्नि की अपेक्षा अहंकारी मनुष्यों के स्वभाव की टक्कर से पैदा हुई अग्नि अधिक भयंकर है क्योंकि प्रथम अग्नि से तो जंगल नष्ट होता है परन्तु दूसरी अग्नि (क्रोधाग्नि) से तो बसे हुए गांव अथवा देश भी उजड़ जाते हैं। ❑❑

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष ....

सोनू की सीख

– ब्रह्माकुमारी शकुन्तला, चरखी दादरी

सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत देश में आज सर्वत्र कंगाली छाई है। देवताओं के वंशज भारतवासी भूख और गरीबी से त्रस्त हैं तथा मोहताज बन गए हैं। वास्तव में कालक्रम में हमारे कर्मों में आई गिरावट ही इसका कारण है। कर्मों की गिरावट ने पर्यावरण को भी बहुत प्रभावित किया है। आज हम असन्तुलित पर्यावरण की भयानक त्रासदी को झेल रहे हैं। प्राणवायु की कमी, कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस की वृद्धि, पृथ्वी के तापमान में उछाल, ओजोन परत में छिद्र, समुद्र के जल-स्तर में वृद्धि, अम्लीय वर्षा, समुद्री जीवों का नाश, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, समुद्री तूफान तथा बंजर होती हुई भूमि हमें बार-बार सावधान कर रहे हैं कि हे मानव! धरती की छाती से चिपके उसके प्रिय पुत्रों को अर्थात् वृक्षों को अपनी वासनाओं, इच्छाओं और तृष्णाओं की भेंट मत चढ़ा। पेड़ मानव जाति पर असंख्य उपकार करते हैं। इस उपकार के प्रति एक निर्दोष बाल-मन भी कितना सजग है! तो हमें कितना सजग होना चाहिए? पढ़िए –

— सम्पादक

सोनू प्रतिदिन की तरह आज भी उसी दृश्य को देखने में तल्लीन था। उसके सभी साथी अपना स्कूल बैग एक तरफ रख कर जमीन में लकीरें लगा कर एक टाँग से उछलते हुए खेल रहे थे लेकिन उसका खेल में मन नहीं लग रहा था। सोनू उस बुजुर्ग व्यक्ति के पौधों के प्रति प्यार व लगन को एकटक देखता जा रहा था जो फावड़ा व बाल्टी लेकर उनसे भी पहले बस-अड्डे पर पहुँच जाता था। वहाँ पर पीने के पानी की एक टंकी थी जिसका पानी रिस-रिस कर पास में ही एक गड्ढे में इकट्ठा होता रहता था। वह बुजुर्ग व्यक्ति उस गड्ढे में से बाल्टियाँ भर-भर कर उस बड़ के पेड़ की जड़ में डालता था। इस दौरान उसके सब कपड़े और फटी हुई जुत्तियाँ भी भीग जाती थीं। फिर भी उस पर ठण्ड का कोई असर नहीं होता था। एक दिन सोनू ने पूछ ही लिया – "बाबा जी, आपको ठण्ड नहीं लगती?" "हाँ बेटा, ठण्ड तो लगती है पर पौधों की भी तो रक्षा करनी है ना! पौधे हमें जीवनदान देते हैं तो हमें इनकी रक्षा में अपने जीवन का कुछ भाग तो दान करना चाहिए।" फावड़े से उसने पौधे के चारों ओर एक खाई खोद दी थी ताकि किसी भी पशु की पहुँच उस तक न हो सके। सोनू ने एक दिन उसे कहते हुए सुना था – "लोग मेरी मेहनत को बेकार कर देते हैं। अपने ऊँट को इस पौधे के पास छोड़ देते हैं। इसकी कच्ची-कच्ची कोपलें निकलती हैं और ऊँट अपनी लम्बी गर्दन से उन कोपलों को खा जाता है। कितने दिन हो गये हैं यह पौधा बढ़ नहीं पा रहा है। पता नहीं क्यों, लोगों को पौधों का महत्त्व ही नहीं है।"

सोनू सोचता था – अवश्य ही इस बुजुर्ग व्यक्ति को गाँव के सरपंच से या किसी संस्था से कुछ पैसा मिलता होगा, नहीं तो इतनी कँपकँपाती ठण्ड में इतनी मेहनत कोई क्यों करने लगा। सोनू से रहा न गया तो पूछ ही लिया – "बाबा जी! आपको इस काम के लिए कितना पैसा मिलता है?" वह हँसने लगा – "पैसा! बेटा, पैसा तो नहीं मिलता लेकिन **खुशी मिलती है जो पैसे से कहीं अधिक कीमती है। मानव जीवन का आधार यह पेड़-पौधे हैं। एक पौधा लगाना भी मानवता की बहुत बड़ी सेवा है। लेकिन बेटा! पौधों को भी ठीक उसी तरह परवरिश चाहिए जैसे तुम्हारी माँ तुम्हारी परवरिश करती है।**" पास में ही खड़े एक विशाल पेड़ की तरफ इशारा करते हुए उसने कहा – "देखो, यह पेड़ जिसकी छाया में गर्मियों में तुम बच्चे खेलते हो, बारिश आने पर इसके नीचे छुपते हो, यह भी इतने ही परिश्रम और

देखभाल से इतना बड़ा हुआ है और अब इसे देखभाल की आवश्यकता नहीं है बल्कि अब यह हमारी देखभाल करता है।

सोनू को याद आया – पिछले दिनों उसके स्कूल में भी राष्ट्रीय सेवा योजना का शिविर लगा था। कॉलेज के बड़े-बड़े लड़के व लड़कियाँ उसके स्कूल में आए थे। उन्होंने स्कूल के मैदान में और गाँव में भी कई स्थानों पर पौधे लगाए थे। सोनू ने उनकी आपस की बातों को सुना था कि राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर में भाग लेने से उन्हें एक प्रमाण-पत्र मिलता है। इससे कॉलेज में प्रवेश या फिर नौकरी आदि मिलने में मदद मिल जाती है। लेकिन इस बुजुर्ग को तो न प्रमाण-पत्र चाहिए और न ही नौकरी। वह तो पढ़ा-लिखा भी नहीं है। वह एक दिन भी स्कूल नहीं गया, उसे अपना नाम भी लिखना नहीं आता लेकिन इस गाँव में उसके लगाये हुए सैंकड़ों पेड़ हैं जो गाँव के चारों तरफ ग्रामवासियों की रक्षा में संतरी की तरह खड़े हैं।

सोनू की बस आई और रोज की तरह सभी बच्चे बस में चढ़ गए। पर स्कूल पहुँचने पर सोनू का मन पढ़ाई में नहीं लग रहा था। रह-रह कर उसके दिमाग में वही दृश्य आ रहा था। एक तरफ तो यह बुजुर्ग अनपढ़ व्यक्ति कड़कती ठण्ड में भी जी-जान से पेड़-पौधों की देखभाल में लगा है और दूसरी ओर उसके पापा हैं, पढ़े-लिखे हैं, सरकारी नौकरी में हैं, हर रोज मुँह अन्धेरे साइकिल और कुल्हाड़ी लेकर नहर पर जाते हैं और पेड़ों को काट कर लकड़ियों का गट्ठर बना कर अन्धेरे-अन्धेरे वापस भी लौट आते हैं। उसकी माँ इन्हीं लकड़ियों से उसे खाना बना कर खिलाती है और दो चपातियाँ उसके टिफिन में भी डाल देती है। आज सोनू से चपातियाँ निगली नहीं गई। अध्यापक ने पाठ पढ़ाया तब भी वह खोया हुआ सोच रहा था – आज उसे कुछ करना होगा। यह तो बहुत बड़ा अनर्थ हो रहा है। कहाँ वर्षों की मेहनत से एक पौधा बड़ा वृक्ष बनता है और उसके पापा कुछ मिनटों में ही ... वह सिहर उठा। उसके कानों में कुल्हाड़ी की ठक-ठक की आवाज गूँज रही थी। उसे पापा को समझाना होगा। लेकिन वह तो अभी छोटा है कैसे अपने पापा को समझायेगा? पापा उसकी बात को मानेंगे? कह देंगे – "तुम्हें क्या मालूम? इस महँगाई के जमाने में बहुत कुछ करना पड़ता है।" छुट्टी के बाद घर आने पर भी वह उदास रहा। मम्मी ने खाने के लिए कहा तो कह दिया – "मुझे भूख नहीं है।" माँ ने बस्ता देखा तो पाया कि दोनों चपातियाँ ज्यों-की-त्यों पड़ी हैं। "सोनू, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?" माथे पर हाथ रखा तो उसकी माँ हैरान रह गई। उसे तेज ज्वर था। शाम को पापा के आने पर माँ ने बताया – "आज सोनू को तेज बुखार है, उसने खाना भी नहीं खाया है।" उसके पापा उसके लिए फल व दवाई लेने चले गए। मम्मी उसके सिर पर ठण्डे पानी की पट्टियाँ रखती जा रही थी। सोनू बिस्तर पर लेटे-लेटे आँगन में पड़े लकड़ियों के गट्ठर को देखे जा रहा था। कभी उसे कानों में उस बुजुर्ग व्यक्ति के बोल सुनाई देते – "बेटा एक पौधा वर्षों की मेहनत के बाद बड़ा पेड़ बन पाता है" और कभी वृक्ष की शाखा पर पड़ती कुल्हाड़ी की ठक-ठक की आवाज सुनाई पड़ती।

सोनू का ज्वर बढ़ता ही गया। उसके पापा पास बैठ उसका सिर सहलाते रहे। दवा लेने पर भी बुखार कम नहीं हुआ। वह बीच-बीच में ज्वर के कारण अस्पष्ट शब्दों में बड़बड़ा भी रहा था। उसे हल्की-सी झपकी आ गई तो उसके मम्मी-पापा भी लेट गए। नींद में ही सोनू को लगा जैसे कि उसके पापा ने साइकिल उठाई, रस्सी और कुल्हाड़ी साइकिल के कैरियर पर रखी और नहर पर पेड़

शेष पृष्ठ.....27 पर

मातेश्वरी जी ने मुझे एक सेकण्ड में नष्टोमोहा बना दिया

– ब्रह्माकुमार श्याम पचौरी, हाथरस

नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा गत सन्देहा – गीता के भगवान का महावाक्य उस समय मेरे जीवन में चरितार्थ हुआ जब मुझे मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती ने एक सेकण्ड में नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा बना दिया। बात सन् 1962 की है, मैं आगरा विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान संस्थान का एम.ए. का छात्र था। छात्रावास में ही रहता था। ईश्वरीय ज्ञान में चलते हुए कुछ ही समय हुआ था लेकिन सभी ईश्वरीय मर्यादाओं का दृढ़ता से पालन करता था। हॉस्टल वार्डन से विशेष अनुमति लेकर स्टोव पर स्वयं ही भोजन बना कर खाता था। जिस प्रकार लौकिक पढ़ाई की क्लास कभी मिस नहीं करता था वैसे ही राजयोग एवं ज्ञान की अलौकिक पढ़ाई की क्लास कभी मिस नहीं करता था। योग का चार्ट नियमित लिखता था एवं ईश्वरीय सेवा में सदैव तत्पर रहता था। पिताश्री ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती, बड़ी दीदी सहित दैवी परिवार के सभी सदस्यों से सदैव स्नेह मिलता था। आज्ञाकारी, वफादार, फरमानवरदार का पाठ सदैव पक्का रहा।

मातेश्वरी जी दिल्ली राजौरी गार्डन में आईं थीं। आगरा से विमला बहन जी एवं महेन्द्र भाई साहब के साथ हम भी मातेश्वरी जी से मिलने दिल्ली गये। मिलन मुलाकात के समय मातेश्वरी जी ने मुझसे हालचाल पूछा। मैंने अपना सच्चा चार्ट बताया कि मम्मा वैसे तो चार्ट सही है लेकिन लौकिक माता के प्रति मोह है। वे मथुरा ज़िले की महिला काँग्रेस की अध्यक्षा एवं ज़िला पंचायत परिषद की उपाध्यक्षा हैं, वे मथुरा के एक गाँव में रहती हैं। लौकिक पिता भी विधायक एवं काँग्रेस के बड़े नेता हैं। लौकिक पिता तो आगरा आकर छात्रावास में मिलकर जाते हैं लेकिन लौकिक माता से मिलना नहीं होता तो उनकी बहुत याद आती है। यह मोह विकार मेरे योग के चार्ट को नीचे करता है। इतना सुनते ही **मातेश्वरी जी ने कहा, बच्चे, माँ तो यह बैठी है। बाकी देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलना ही है। इतना कहकर मातेश्वरी जी ने मुझे अपनी ममतामयी गोद में लेकर मेरे सिर पर**

ममता का हाथ फिराते हुए मुख में टोली (प्रसाद) खिलाते हुए योग की ऐसी दृष्टि दी कि लौकिक माता के प्रति मेरा मोह बिल्कुल समाप्त हो गया। मेरा मोह शुद्ध प्रेम में बदल गया। जिसका लाभ यह मिला कि लौकिक माता जी भी मथुरा सेवाकेन्द्र प्रभारी श्रद्धेय चाची जी (फूल चमेली) के पास ज्ञान-योग सीखने लगीं और मेरी हर प्रकार से सहयोगी बन गईं। लौकिक पिता भी मेरी धारणायें देख ज्ञान में सहयोगी बन गये। इन दोनों के ज्ञान-योग में सहयोगी बनने से मथुरा के संसद सदस्य चौधरी

दिगम्बर सिंह एवं कई विधायक तथा आगरा मण्डल के कई बड़े नेता भी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कार्यों के प्रति सहयोगी बन गये।

मातेश्वरी जी से कई बार मिलन हुआ। उनकी शिक्षाओं की जीवन में ऐसी अमिट छाप पड़ी है कि जिनमें से कुछेक अनुभव लिखने को लेखनी मचल रही है। दिल्ली आगमन के दौरान ही मातेश्वरी जी का कार्यक्रम गुड़गाँव जाने का बना। हम सब भी मातेश्वरी जी के साथ गुड़गाँव गए। वहाँ पर मातेश्वरी जी का विशाल कार्यक्रम था। गुड़गाँव के भाई-बहनों ने टैन्ट-शामियाने लगा कर सुरम्य व्यवस्था की थी। हज़ारों भाई-बहनें थे। उसी समय कुछ लोग विरोध करने के स्वभाव के अनुसार हल्लागुल्ला मचाते हुए प्रदर्शन करने लगे। जब मातेश्वरी जी ने सुना तो उन्होंने कहा, **'मेरे जो भूले-भटके बच्चे बाहर आवाज कर रहे हैं उन्हें अन्दर बुला कर बिठाओ।'** उनको अन्दर शामियाने में बुलाकर मातेश्वरी जी के सम्मुख बिठा दिया गया। उस समय जगदम्बा का साक्षात् स्वरूप देखने को मिला कि जो विरोध कर रहे थे, वे शांत होकर मातेश्वरी जी की मधुर वाणी दत्त चित्त होकर सुनते रहे। बाद में मातेश्वरी जी के हाथ से टोली (प्रसाद) ग्रहण कर नतमस्तक होकर कहने लगे, वास्तव में ये तो अपार ज्ञान की भण्डार, साक्षात् सरस्वती का अवतार हैं। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी ने ब्रह्मा-मुख से निसृत निराकार परमपिता परमात्मा शिव की शिक्षाओं को, अपनी मधुर ज्ञान वीणा से इस अनुपम तरीके से सुनाया कि जो भी उनके सम्मुख आकर ईश्वरीय वाणी सुन लेता वही ईश्वरीय गोद का बच्चा बन जाता। अनेकों आत्मायें, आज तक भी अनुभव सुनाती हैं कि हमें मातेश्वरी जी ने निश्चय बुद्धि बना कर शिव बाबा का सपूत वारिस बच्चा बना दिया। मातेश्वरी जी प्रेम की मूर्ति थीं। **ब्रह्मा के बच्चों की पालना एवं यज्ञ की संभाल, बाल ब्रह्मचारिणी कन्या होते हुए भी एक अनुभवी माँ की तरह करती थीं।** इसलिए सभी यज्ञवत्स उन्हें मातेश्वरी (मम्मा) कहकर पुकारते थे। एक माँ की तरह सभी की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखती थीं। एक बार की बात है कि हमारी पार्टी आगरा से विमला बहन जी के साथ बापदादा से मिलने मधुबन (माउण्ट आबू) गई। उस समय कम-से-कम एक सप्ताह तक ब्रह्मा बाबा एवं मम्मा के साथ मधुबन में हर प्रकार की शिक्षाओं एवं अनुभवों को सीखने का मौका मिलता था। कर्मयोग की भी क्रियात्मक शिक्षा मिलती थी। बैडमिन्टन खेलते हुए भी निरन्तर शिव बाबा की याद कैसे रहे, यह मम्मा-बाबा से सीखा।

सारे दिन की ज्ञान-योग की शिक्षा-दीक्षा के बाद रात्रि क्लास में पाण्डव भवन के वर्तमान हिस्ट्री हॉल में पहले मातेश्वरी जी आकर सभी बच्चों की राजीखुशी (सैलवेशन) पूछती थीं। मैं चूँकि मम्मा-बाबा का लाड़ला छोटा बच्चा था अत: अपनी सैलवेशन मम्मा के सामने रखी, मम्मा! पुराने भाई-बहनों ने तो मात-पिता बापदादा के साथ के हर प्रकार के अनुभव किए हैं, आज हम भी मम्मा-बाबा के साथ श्रीकृष्ण की दुनिया के रासविलास का अनुभव करना चाहते हैं। मम्मा ने कहा, बच्चे की बात बाबा के सामने रख दूँगी, आगे बाबा की मर्ज़ी। थोड़ी देर बाद ही पिताश्री ब्रह्मा बाबा क्लास में आये। मम्मा से बच्चों की सैलवेशन पूछी, मम्मा ने सबसे पहले श्याम पचौरी बच्चे की बात रख दी। फिर क्या था, बाबा ने सभा में उपस्थित दो संदेशी बहनों को ध्यान में भेजा। थोड़ी ही देर में वैकुण्ठ का नजारा सामने उपस्थित हो गया। मम्मा-बाबा के साथ हम बच्चों ने भी श्रीकृष्ण की दुनिया का साक्षात् अनुभव किया। अव्यक्त फ़रिश्ता बन, रास किया। देह सहित देह की दुनिया को भूल अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया। कहाँ तक लिखा जाये, मातेश्वरी जी आज भी अमृतवेले आकर मेरी हरेक सैलवेशन पूछती हैं। हम बच्चे धन्य हैं जो हमें मम्मा-बाबा का प्यार मिला।

**

क्रोध है हार, प्रेम है जीत

– ब्रह्माकुमार ताराचन्द, कुतुब एंक्लेब (देहली)

आज की दुनिया में मनुष्य के दु:ख और अशान्ति के मुख्य कारण हैं – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और इनके बाल-बच्चे जैसे कि ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, ठगी आदि-आदि। इन सबकी एक लम्बी सूची है जिसे सब जानते हैं। ऐसे तो हर विकार विनाशकारी है पर आज इस लेख में हम क्रोध पर चर्चा कर रहे हैं। जब इच्छा पूर्ति न हो, जैसा चाहते हैं वैसा न हो, मन में हीनभावना या हिंसा भावना या बदले की भावना हो तो क्रोध आता है। क्रोध का जन्म मन में हिंसा भाव से होता है। क्रोध आने पर मनुष्य पागल हो जाता है और विवेक खो देता है। क्रोधी इन्सान का चेहरा ही बदल जाता है। उसके मन का सन्तुलन बिगड़ जाता है। क्रोधी व्यक्ति जरा-सी बात पर भड़क जाता है। जोश में वह होश खो बैठता है और ऐसे-ऐसे कार्य कर डालता है कि बाद में उसे बहुत पछताना पड़ता है। जैसे मन में विचार आते हैं वैसी ही भावना बनती है। मन में सकारात्मक विचार अच्छी भावना लाते हैं और नकारात्मक विचार बुरी भावना लाते हैं। ईर्ष्या, द्वेष, कटुता, वैर-विरोध आदि क्रोध के ही पारिवारिक सदस्य हैं। इनमें से कोई भी मन में हाजिर रहेगा तो नकारात्मक सोच पैदा करेगा। नकारात्मक चिन्तन दु:ख देता है और सकारात्मक चिन्तन सुख देता है। क्रोध एक पाप है जो लड़ाई-झगड़ों को बढ़ावा देता है, आपसी प्रेमभाव खत्म कर दुश्मनी बढ़ाता है, तनाव व चिन्ताओं को जन्म देता है, बुद्धि को आसुरी बनाता है, अशान्ति फैलाता है तथा धैर्य, पवित्रता, सहनशीलता, निर्मलता, दयाभाव को नष्ट करता है। यही मनुष्य का नैतिक पतन करता है, भाई-भाई की भावना खत्म करता है, अदालत और जेल में भिजवाता है, इन्सानियत को नफरत में बदल देता है। क्रोध, शरीर व स्वास्थ्य पर भी बहुत बुरा प्रभाव डालता है। क्रोध एक अग्नि है जो पहले सुलगती है, धुआँ करती है और फिर एक दिन अचानक भभक उठती है। यह अग्नि इन्सान स्वयं लगाता है। क्रोधी मनुष्य कोई कार्य सही ढंग से नहीं कर पाता। उसका शरीर काँपने लगता है और उसमें चिड़चिड़ापन भी आ जाता है। क्रोध का असर मनुष्य की ग्रन्थियों पर भी पड़ता है जिससे वे ठीक कार्य नहीं कर पातीं। क्रोध का असर मानसिक स्थिति (nervous system) पर भी पड़ता है। मानसिक स्थिति बिगड़ने पर मनुष्य पागलों जैसी हरकतें करता है जिसे temperory madness भी कहते हैं। पागलपन में मनुष्य सामान्य स्थिति से भारी काम भी आसानी से कर डालता है। क्रोध का असर हमारे खून, धड़कन, दिल व दिमाग पर भी पड़ता है जिससे तरह-तरह की बीमारियाँ जन्म लेती हैं, इसलिए इसे राक्षसी वृत्ति कहते हैं। क्रोध में इन्सान स्वयं भी जलता है और दूसरों को भी जलाता है। क्रोध में मनुष्य की मत मारी जाती है और वह गलत से गलत कार्य भी कर डालता है। क्रोध विनाश की एक चिंगारी है जो इन्सान की खुशी छीन लेता है और प्रभु प्राप्ति में बाधक है। इससे मनुष्य का आचार, विचार और व्यवहार बदल जाता है। बार-बार क्रोध करने से मनुष्य के शरीर में गर्मी बढ़ जाती है जिससे मानसिक रोग पैदा हो जाते हैं। कहते हैं कि क्रोध से तो घर में घड़ों का पानी तक भी सूख जाता है।

क्रोध का निवारण – प्यारे मीठे शिव परमात्मा कहते हैं कि सदा स्वमान में रहो। आत्मा का स्वधर्म ही है शान्तस्वरूप। क्रोध आने पर अपनी विचारधारा बदल दें, वहाँ से कहीं दूसरी जगह चल दें या बात को

इधर-उधर टाल दें। क्रोध के समय धैर्य, शान्ति व बुद्धि से काम लें। सन्तुलन बनाना सीखें। क्रोध में एक गिलास ठण्डा पानी पीने की आदत डालें। सदा परमात्मा की याद में रहें, ज्ञान मंथन करें, पग-पग पर फॉलो फादर करें। जब मन ही परमात्मा में लगा दिया तो गुस्सा कैसे आ सकता है? भाई-भाई की भावना रखें। बदले की भावना से बहुत से देश, साम्राज्य नष्ट हो चुके हैं। बदले की भावना (हीनभावना) न रख कर, बदल कर दिखाएँ। आपसी प्रेमभाव रखें। यही बहादुरी है, यही प्यारे बाबा की हम बच्चों से आश है।

सदा करो, राजयोग का अभ्यास,
न आने दो गुस्से को पास।
व्यर्थ को छोड़, समर्थ बनो,
अभी नहीं तो कभी नहीं।।

कहते हैं कि प्रेम से ही दिलों को जीता जा सकता है, क्रोध से नहीं। जहाँ प्रेम है, वहाँ जीत है, जीवन सुखी और खुशहाल है। अत: परमात्मा की दी हुई शिक्षाओं पर चल कर, प्रेमभरी, सुखमय दुनिया लाने का वायदा पूरा करना है। क्रोध को छोड़, प्रेम का नाता जोड़, इसी में कल्याण है। आप नजरें बदलेंगे तो नजारें स्वयं बदल जायेंगे अत: प्रेम करते चलो।

***

संसार सुख स्वरूप है

– ब्रह्माकुमार बिरादर, हैदराबाद

वर्तमान संसार की बिगड़ी हुई हालत को देख कर कई लोग कहते हैं कि भगवान ने यह संसार रचा ही क्यों? यहाँ पर तो पग-पग पर कष्ट हैं, जीवन दु:खों से भरा पड़ा है, लोग जीवन जी नहीं रहे हैं वरन् जीवन का भार ढो रहे हैं और कर्म कूट रहे हैं, भगवान को शायद, ऐसा जीवन देकर और मनुष्यों को दु:खी करके तमाशा देखने में आनन्द आता है। इस प्रकार की और भी बहुत-सी प्रतिक्रियाएँ लोग व्यक्त करते रहते हैं। वास्तव में ये प्रतिक्रियाएँ इस बात की सूचक हैं कि लोग न तो भगवान को और न ही उनके कर्त्तव्य को सही रूप से जानते हैं। वे देहाभिमान-वश, विकारों के वश, क्षुद्र तृष्णाओं के वश तथा इन्द्रियों के वश होकर जीवन व्यतीत करते हैं तथा परिणामस्वरूप दु:ख उठाते हैं। परन्तु अपने दु:खों के सही कारणों को न पहचानने से भगवान को दोषी ठहराते हैं। एक दयालु सेठ के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ –

एक गाँव में पानी की कमी रहती थी। एक परोपकारी सेठ ने पर्याप्त धन खर्च करके कुआँ बनवा दिया। लोगों का कष्ट दूर हो गया। गाँव में हँसी-खुशी छा गई। एक दिन एक शरारती लड़का कुएँ की दीवार पर चढ़ कर शरारतें करने लगा और उसमें गिर कर मर गया। लड़के का पिता इस दु:ख में अपना विवेक खो बैठा और सेठ को गाली देने लगा कि तूने कुआँ बनवाया, इसलिए ही मेरा लड़का अकाल-मृत्यु को प्राप्त हुआ। पाठकगण विचार करें, सेठ ने तो लोगों के सुख के लिए कुआँ बनवाया था। लेकिन बच्चे ने कुएँ की दीवार को ही खेल का मैदान समझ लिया। **अच्छी चीज़ का भी ग़लत प्रयोग करेंगे तो दु:ख तो मिलेगा ही। इसी प्रकार, भगवान ने भी इस सृष्टि को अल्लाह का बगीचा बनाया था जिसे जन्नत, स्वर्ग, सतयुग आदि नामों से भी जाना जाता है। वहाँ हर नर-नारी, श्री लक्ष्मी तथा श्री नारायण के समान 16 कला सम्पन्न तथा सम्पूर्ण निर्विकारी थे परन्तु कालक्रम में दैवी गुणों वाला दिव्य मानव अपनी देह और इन्द्रियों का दुरुपयोग करने लगा और इसलिए स्वधर्म को भूल कर कलियुग अन्त में साधारण मानव बन गया। दुरुपयोग का फल ही दु:ख-अशान्ति है।** इस दु:ख-अशान्ति से मानव मात्र को छुड़ाने के लिए भगवान सहज ज्ञान और राजयोग सिखाते हैं और संसार को पुन: सुख-शान्ति का वरदान देकर सतयुग में बदल देते हैं। अत: भगवान दु:ख नहीं देते, न ही संसार दु:ख स्वरूप है। **संसार का आदि स्वरूप सुख भरा था और अब शीघ्र ही संसार सुखमय बनने वाला है भगवान की श्रीमत पर।** उस सुख भरे संसार में वही जायेंगे जो अपनी देह और इन्द्रियों का विश्वकल्याण में सदुपयोग करेंगे। ***

गीता का भगवान

– ब्रह्माकुमार महावीर सिंह खर्ब, सोनीपत

आपको दो बार पहले भी बता चुका हूँ कि आपको कोई बीमारी नहीं है, आप अपनी चिन्ता छोड़ो – डॉक्टर ने मरीज से कहा। **"लेकिन डॉक्टर साहब, आपने मुझे यह बताया ही नहीं कि मैं अपनी चिन्ता कैसे छोड़ूँ?"** मरीज के इस प्रश्न की डॉक्टर को आशा न थी तथा चिन्ता कैसे मिटे, यह जवाब भी उसके पास न था। पृथ्वी का लगभग 80% भाग सागर के गर्भ में समाया है। मानव का अवचेतन मन भी लगभग 80% है तथा **मनुष्य की बीमारियों का 80% भाग भी चिन्ता व तनाव-जनित है। यदि मनुष्य को अपने मन-मस्तिष्क का कचरा शोधन करना है तो विचारधारा को सकारात्मक बनाना होगा।** खुशनुमा विचार मन-मन्दिर में सजाने होंगे। अति सुन्दर विचारों का स्रोत भला सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् परमात्मा के सिवाय अन्य कौन हो सकता है? अत: मानव को उनसे जुड़ना होगा, उनके गुणों को याद करना होगा, यह याद की यात्रा ही योग है।

गीता एक योग-शास्त्र है – श्रीमद्भगवद्गीता एक योग शास्त्र है। गीता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में, पुष्पिका में इसे 'ब्रह्मविद्या' विषयक योग-शास्त्र कहा गया है न कि अस्त्र-शस्त्र का शास्त्र। योग शब्द युज् धातु से बना है जिसका अर्थ है जुड़ना। अत: गीता शास्त्र हुआ आत्मा का परमात्मा से मेल कराने वाला आध्यात्मिक शास्त्र।

रचना का नाम – किसी भी ग्रन्थ या पुस्तक का नाम उसके नायक, घटना अथवा विचार-बिन्दु पर आधारित होता है जैसे कि 'रामायण' तथा 'पैराडाइज लॉस्ट' आदि। इसी प्रकार, श्रीमद्भगवद्गीता का नाम ही इसकी व्याख्या करता है। श्रीमद्भगवद्गीता अर्थात् स्वयं भगवान द्वारा प्रदत्त श्रीमत जिसे श्रेष्ठ मत भी कह सकते हैं। श्रीमत होती है कल्याणकारी मत। इस प्रकार की मंगलकारी मत केवल परमात्मा ही प्रदान कर सकते हैं जो सभी आत्माओं के रूहानी पिता हैं। प्रश्न उठता है कि क्या श्री कृष्ण को परमात्मा कहा जाए? क्या विश्व के लोग श्री कृष्ण को भगवान मानने को तैयार हैं?

परमात्मा का स्वरूप – भगवान के अवतार के रूप में श्रीकृष्ण, श्री रामचन्द्र तथा परशुराम इत्यादि का नाम आता है। आजकल तो अनेक आचार्य लोग भी भगवान का टाइटल लगा लेते हैं। समस्त विश्व तो श्रीकृष्ण को भी भगवान नहीं मानता फिर अन्य देहधारियों की तो बात ही क्या है! **विश्व के मुख्य धर्म भगवान को ज्योति-स्वरूप मानते हैं जो अजर, अमर, अजन्मे तथा दिव्य हैं जबकि श्री कृष्ण का जन्म गर्भ से हुआ। वे एक समय-विशेष में युवा हुए व मृत्यु को प्राप्त हुए। भगवान तो अकाल-मूर्त हैं। वे परमप्रकाश हैं, आदित्य-वर्ण हैं। वे ज्ञान-सूर्य हैं जो अज्ञानता के अन्धकार को मिटाते हैं। उस अखण्ड प्रकाश के साथ मधुर-मन के तार निरन्तर जोड़े रखना ही अव्यभिचारी पूजा है। विदेही बन उसके साथ योग लगाना ही पूजा का श्रेष्ठ रूप है।**

सन्तों के विचार – महर्षि दयानन्द के मतानुसार श्रीकृष्ण देव पुरुष थे, भगवान नहीं। उनके अनुसार भगवान नस-नाड़ी के वश में नहीं होते। सन्त कबीर परमात्म-स्वरूप के विषय में कहते हैं – **जिनके मुँह-माथा नाहिं।** तुलसी अपने मानस में कुछ इस प्रकार कहते हैं – **बिनु पग चलई सुनई बिनु काना, कर बिनु करम करइ विधि नाना।** कुरान में परमात्मा को **अल् मुबीन** कहा है जिसका अर्थ है सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्। संस्कृत के एक श्लोक में उन्हें आत्मा का सबकुछ मान कर कहा गया है – **त्वमेव माता च पिता त्वमेव ...त्वमेव सर्व मम देव देव।।** भगवान को माता व पिता कहने

का अर्थ है कि वे न तो पुरुष हैं और न स्त्री। देव-देव अर्थात् वे (ब्रह्मा, विष्णु, शंकर) तीनों देवों के भी देवता हैं। वे सर्वोच्च सत्ता हैं लेकिन श्री कृष्ण जी को तो विष्णु का अवतार कहा जाता है अत: उन्हें तीनों देवों का देव नहीं कहा जा सकता।

निवास-स्थान – गीता के अध्याय 8 के श्लोक 10, 11, 12 तथा 21 में भगवान के निवास स्थान को परमधाम बताया गया है। उन्हें सूर्य और तारागण से भी परे स्थित **परमधाम का वासी कहा गया है जबकि श्री कृष्ण तो इसी धरा के महाराजा हुए हैं। परमात्मा तो अभोक्ता हैं, कर्मातीत हैं। वे निराकार, प्रकाशस्वरूप, निर्विकारी तथा निरहंकारी है।** उन परमशक्ति की स्वेच्छा पर निर्भर है कि वे कब, कहाँ और कैसे अपने मीठे भक्तों को स्वरूप दर्शन कराते हैं।

पर्यायवाची नाम – गीता में गीता-ज्ञान-दाता का नाम केवल कृष्ण ही नहीं आया है अपितु केशव, श्री भगवान, जगतपिता, महाकाल, प्रकाश स्वरूप, सच्चिदानन्दघन इत्यादि भी आए हैं। भगवान के सभी नाम या तो गुणवाचक हैं या कर्त्तव्यवाचक हैं। जनता की प्रार्थना स्वीकार करने के कारण परमात्मा को जनार्दन, त्रिदेव के द्वारा कर्त्तव्य कराने वाले होने के कारण देव-देव (देवों का देव) कहा गया है। यदि कृष्ण नाम को व्यक्तिवाचक न मानकर गुणवाचक माना जाए तो **भगवान आकर्षण स्वरूप भी हैं।** इन नामों का समन्वय श्रीकृष्ण की बजाय भगवान के साथ अधिक बैठता है। गीता में वर्णित भगवान को प्रकाश स्वरूप व आदित्य वर्ण बतलाया गया है जो श्रीकृष्ण के साँवले रूप के विपरीत हैं। श्याम वर्ण श्री कृष्ण को ज्योतिस्वरूप भगवान कैसे माना जा सकता है?

समभाव दृष्टि या शत्रुताभाव – श्री कृष्ण जी अर्जुन को युद्ध करने के लिए तैयार करते हैं। साधन और साध्य का सम्बंध बीज और फल जैसा है। **जब साधन, शत्रुता व युद्ध होगा तो परिणाम भी क्रोधाग्नि व हिंसा होगा** जबकि गीता में अनेकानेक श्लोक काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार को मिटाने के लिए कहे गये हैं। यह भी उपदेश दिया गया है कि सुख-दु:ख, लाभ-हानि, जय-पराजय को समान मानकर **'सुखः दु:खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ'** तू विकारों के साथ युद्ध के लिए तैयार हो जा। ऐसा करने पर तुम्हें पाप नहीं लगेगा।

क्या सोलह कला सम्पूर्ण श्रीकृष्ण युद्ध करायेगा – सोलह कला सम्पूर्ण का अर्थ है सोलह आने शुद्ध। शत्-प्रतिशत शुद्धता का आशय देव-पुरुष से है। महर्षि दयानन्द ने भी श्री कृष्ण को देव-पुरुष ही माना है। यदि देवपुरुष **श्रीकृष्ण टीचर के रूप में अपने शिष्य** अर्जुन को स्थित-प्रज्ञ बना दे व उसे कर्मों के गुप्त-रहस्यों का ज्ञान करा दे तो क्या ऐसा टीचर व शिष्य युद्ध जैसे दुष्परिणामी मार्ग को अंगीकार कर सकते हैं? इस युद्ध के विषय में प्रख्यात समालोचक अभिनव गुप्त कहते हैं कि **अविद्या के अन्धकार तथा मन के अशुद्ध संकल्पों को मारना ही इस युद्ध का लक्ष्य है।** गीता को कविता के रूप में लिखा गया है तथा किसी भी कविता का प्रतीकात्मक अर्थ उसके शाब्दिक अर्थ से भिन्न होता है। अत: गीता का प्रतिपाद्य विषय है आत्मा व परमात्मा का दर्शन जो इन रहस्यों को खोलकर आत्मा-दर्शन व सृष्टि-चक्र के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट रूपेण हमारे सामने रख देती है। आत्म-दर्शन का ही अर्थ है स्व-दर्शन, न कि सुदर्शन-चक्र हथियार। क्या यह आत्म-ज्ञान क्रोधाग्नि व युद्धाग्नि में झोंकने वाला हो सकता है? क्योंकि क्रोध की अवस्था में तो मनुष्य उबलते पानी समान बन जाता है और जिस प्रकार उबलते पानी में कोई भी अपना चेहरा नहीं देख सकता, उसी प्रकार क्रोध की अवस्था

में आत्म-स्वरूप नहीं देख सकता। वास्तव में गीता-ज्ञान तो अध्यात्म-ज्ञान है जो आत्मा की थकान व भटकन दूर करके शीतलता प्रदान करता है।

गीता-सन्देश – गीता का एक नायक गुप्त है और गुह्य-ज्ञान दे रहा है। दूसरा नायक है शरीरधारी जो अर्जुन को युद्ध में प्रवृत होने का सन्देश देता है। गीता-ज्ञान भौतिक है या आध्यात्मिक, यह आलोचना का विषय है। शरीर तो कर्म करने का साधन मात्र है क्योंकि कहा भी है **'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'**। आत्मा किसी काल में न तो जन्म लेती है और न मरती है। इसे शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती और वायु सुखा नहीं सकती। गीता का दूसरा अध्याय तो अध्यात्म से ओत-प्रोत है। आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान-दाता हमारे अन्दर छिपी आध्यात्मिकता को उकेरकर हमें स्व-तुल्य हीरे जैसा बनाता है। वह विधाता स्वयं भी विदेही है और अपनी सन्तानों को उनकी मूलभूत अशरीरी अवस्था का भान कराकर गीता का सार्वभौमिक पाठ सिखाता है। जिस प्रकार **मानव अपने पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्र धारण करता है वैसे ही आत्मा भी पुराने शरीर को छोड़ नया शरीर रूपी वस्त्र धारण कर लेती है** – (वासांसि जीर्णानि ....नवानि देही)। जब मनुष्य की बुद्धि परमात्मा में स्थिर हो जायेगी तब मनुष्य योग को प्राप्त हो जाएगा जिससे नर को नारायण का पद प्राप्त हो जाएगा।

साधन व साध्य का सम्बन्ध – गीता में तो स्थान-स्थान पर विकारों को त्यागने का संदेश मिलता है तथा उनका किस तरह व्यापक रूप होता है, वैज्ञानिक-विधि से निम्न श्लोक में बताया गया है – **क्रोधाद् भवति सम्मोहः .. बुद्धिनाशात् प्रणश्यति** (2.63)। महात्मा गांधी जी ने कहा है कि यदि **साधन दोषपूर्ण होता है तो साध्य भी दोषरहित नहीं हो सकता। जैसा बीज बोया जाता है वैसा ही फल पाया जाता है। क्रिया तथा प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक नियम भी यही है।** भगवान अपनी आत्मा रूपी सन्तानों के पाप कर्मों को धोकर उन्हें चमकता सितारा बना देते हैं। अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले जाने वाले ये ज्ञान-सूर्य शिव हैं जिन्हें खुदा-दोस्त भी कहते हैं, न कि श्री कृष्ण है। फिर भी गीता में यदि श्री कृष्ण को नायक मान लिया जाए तो वह अस्त्र-शस्त्र की विद्या क्यों नहीं सिखलाता है यदि यह खूनी युद्ध है तो? किन्तु गीता के भगवान तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य इत्यादि विकारों रूपी शत्रुओं से युद्ध हेतु योग-पद्धति बताते हैं– "मुक्तिर्हित्वान्यथारूपं स्वरूपेण व्यवस्थितिः" मुक्ति का अर्थ है इस भौतिक जगत् की कलुषित चेतना से मुक्त होना और शुद्ध चेतना में स्थित होना, न्यारे व प्यारे रहना। कलुषित चेतना से मुक्त होकर कौन अर्जुन किसके साथ युद्ध करेगा? **क्या वह हिंसात्मक युद्ध करेगा अथवा अपने अन्तःकरण की बुराइयों के साथ युद्ध करेगा– यह चिन्तन का, विवेक का विषय है।**

केवल भगवान ही त्रिकाल-दर्शी हैं – अश्वमेध पर्व में जब अर्जुन पुनः गीता सुनाने के लिए श्री कृष्ण जी से आग्रह करते हैं तो श्री कृष्ण उस समय गीता-ज्ञान सुनाने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। जरा सोचिए कि क्या त्रिकालदर्शी भगवान असमर्थ हो सकते हैं? एक देहधारी मानव असमर्थ हो सकता है परन्तु परमात्मा कदापि नहीं। भक्तजन भी कृष्ण का गायन सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी और अहिंसक मर्यादा पुरुषोत्तम देवता कहकर करते हैं जबकि परमात्मा तो मनुष्य सृष्टि के बीज रूप, निराकार, पारलौकिक परमपिता परमात्मा, त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी और त्रिलोकीनाथ हैं।

(क्रमशः)

वात्सल्य का झरना

– ब्रह्माकुमार बसंत कुमार, इन्दौर

सर्वविदित है कि 'ईश्वर सभी जगह नहीं हो सकता इसलिये उसने माँ को बनाया।' माँ, ईश्वर की वह श्रेष्ठतम एवं अनुपम कृति है जिसके स्नेहिल स्मरण से बच्चों के मन व प्राण अनोखी पुलक से भर जाते हैं तथा अनेकानेक मृदुल अहसास, अनगिनत हृदयस्पर्शी अनुभूतियाँ और असंख्य ममतामयी भावनाएँ बच्चों के अंत:करण के नन्हें आंगन में बरस पड़ती हैं। अपने बच्चों के प्रति अपार स्नेह, प्यार, ममता तथा निश्छल वात्सल्य ही मीठी माँ का स्वभाव होता है। उस वात्सल्य मूर्ति के ममत्व का कहीं भी अंत नहीं होता है। वात्सल्य उससे ऐसे प्रवाहित होता है जैसे – फूलों से महक, चाँद से चाँदनी और पहाड़ों से झरना। जब बच्चा जन्म लेता है तो उसके मासूम होंठों से पहला शब्द 'माँ' ही निकलता है और तब माँ भी वात्सल्य की जीवंत प्रतिमा बनकर उस पर अपना संपूर्ण स्नेह न्यौछावर कर देती है। मीठी माँ को सम्मुख देखते ही या उनकी भीनी-सी महक आते ही बच्चों के दिल के तार झंकृत हो उठते हैं। माँ, मानव की प्रथम गुरु होती है। बच्चा, जवान या वृद्ध कोई भी हो, 'माँ' शब्द सुनते ही उसके प्राणों में शीतलता का संचार हो जाता है। बच्चों को लगता है कि मेरी प्यारी माँ सुदूर किसी अन्यत्र जगह नहीं वरन् सदा ही मेरे पास है,

एकदम पास है और उसके शीतल आँचल का एक छोर मुझे छू रहा है और मैं अपनी प्यारी व मीठी माँ के आशीष तले सुरक्षित हूँ। बच्चों के नन्हे कोमल हृदय में अपनी माँ के लिये यही भावनाएं होती हैं कि ओ मीठी माँ, आपके अलावा इस अनजाने संसार में हमारा है ही कौन। यहाँ पर सभी पराए से लगते हैं और इन सबके बीच आप ही हमें अपनी लगती हो। जीवन के हर मोड़ पर, प्यारी माँ, हमें केवल आपकी ही याद आती है। हमारे लिये एकमात्र संजीवनी है – 'माँ'। यह एकाक्षर ही हम बच्चों का प्राण है। जब आप सम्मुख होती हो तो लगता है मानो पतझड़ में भी बसंत आ गया हो। कोयल-सा मधुर कलरव आपकी मीठी-सी बोली में समाहित जान पड़ता है और आपके हृदय का वात्सल्य हमारे मन के तारों को झंकृत कर उसमें नई चेतना का संचार करता है। जब रातों को नींद नहीं आती तब आप ही अपनी शीतल गोद में सुलाकर हमें मीठी-मीठी लोरियां सुनाती हो। माँ, आप वात्सल्य का वह सदाबहार झरना हो, जो सदा अपने बच्चों के लिये ही प्रवाहित होता है।

माँ के ये सारे दिव्य, अलौकिक, अनुपम, रूहानी गुण और कर्त्तव्य हम बच्चों ने अपनी मीठी 'जगदम्बा' माँ के अलौकिक जीवन में अव्यक्त दृष्टि से देखे हैं। उन्हें हम प्यार से 'मम्मा' कहते हैं। उनके पुण्य स्मरण दिवस पर हम उनके इन दिव्य गुणों और शक्तियों को जीवन में साकार कर लें तो यही हम बच्चों की अपनी मीठी-मीठी माँ के प्रति सच्ची-सच्ची प्रेमांजलि है। मेरा दिल गा रहा है –

माँ है मेरी इतनी प्यारी,
लगती है वो जग से न्यारी।
स्नेह लुटाए हम पर इतना,
वार दूँ मैं यह दुनिया सारी।
आओ मनाएं मम्मा दिवस,
पूरी करें आशाएं सारी। ★

आत्म-चिंतन के वैज्ञानिक पहलू

– ब्रह्माकुमार नित्यानंद, बी.के. कालोनी, शान्तिवन

यह सृष्टि एक अविनाशी नाटक है जिसमें हरेक आत्मा एक एक्टर है। शरीर आत्मा के लिए वस्त्र के समान है जिसे आत्मा ने इस अविनाशी विश्व नाटक में अभिनय करने हेतु धारण किया है। चूँकि एक निर्दिष्ट (specific) शरीर, एक निर्दिष्ट आत्मा के लिए ही निर्मित होता है इसलिए 'मृत्यु' पर जब शरीर का मालिक (आत्मा) इसे छोड़ देता है, तो यह बेकार हो जाता है (यहाँ 'मृत्यु' का आशय आत्मा के लिए निर्धारित एक निर्दिष्ट भूमिका (part) के समाप्त हो जाने से है)। फिर आत्मा एक नया शरीर रूपी वस्त्र लेता है जो पुनर्जन्म के द्वारा इसकी अगली भूमिका के लिए उपयुक्त होता है। चेतन आत्मा जड़ शरीर का संचालन किस प्रकार करती है, यह समझने के लिए जीवात्मा (human being) के मनोजैविकीय (psychobiological) पहलू को जानना ज़रूरी है।

जीवात्मा का मनोजैविकीय पहलू (Psychobiological Aspect)

जीवात्मा (human being), जीव (body) और आत्मा (soul) का सम्मिश्रण है। जीव अर्थात् शरीर में निर्जीव पदार्थों में पाई जाने वाली भौतिक ऊर्जा (physical energy) विद्यमान होती है जबकि आत्मा में पराभौतिक ऊर्जा (Metaphysical Energy) अथवा आध्यात्मिक ऊर्जा कार्य करती है। जीवित शरीर की भौतिक ऊर्जा को जैविकीय ऊर्जा (biological energy) कहा जाता है। इसे ही जीवन शक्ति (life force) भी कहा जाता है। आत्मा की पराभौतिक ऊर्जा इसी जीवन शक्ति के साथ तालमेल कर शरीर का नियन्त्रण करती है। इसी को जीवात्मा का मनोजैविकीय पहलू कहते हैं जिसके आधार पर जीवन सम्भव होता है। हालाँकि शरीर भौतिक ऊर्जा से बना हुआ है और भौतिक ऊर्जा में चेतनता नहीं है। फिर भी भौतिक शरीर के अन्दर जब तक चेतन आत्मा विराजमान है, इसकी पराभौतिक ऊर्जा हर कोशिका में विद्यमान होकर शरीर को चेतनता प्रदान करती है। इसे एक उदाहरण से भी समझा जा सकता है। **जैसे लोहे के तार को हम छू दें तो हमें कुछ महसूसता नहीं होती लेकिन इसमें करेंट के आने पर यह सारे तार में विद्यमान हो जाता है, फलस्वरूप तार को कहीं से भी छूने पर झटका लगता है। इसी प्रकार, आत्मा के शरीर में आने पर शरीर आत्मा की चेतनता के अनुरूप कार्य करने से चेतन लगने लगता है और यही कारण है कि मनुष्यात्मा को यह भान नहीं रहता है कि शरीर तो वास्तव में जड़ है, चेतन आत्मा ही इसमें बैठ कर आँख, कान, हाथ, पैर तथा अन्य कर्मेन्द्रियों से अपना कार्य करा रहा है।**

आत्मा की पराभौतिक ऊर्जा के तीन स्वरूप

1. मन - मानस ऊर्जा बहुत तीव्र है और स्थान व समय की सीमाओं से परे है। इसमें असंख्य संकल्प, इच्छाएँ, भावनाएँ, संवेदनाएँ, कल्पनाएँ इत्यादि उत्पन्न होते रहते हैं। भावनाओं की गहराई को प्रकट करने के लिए ही इसे 'हृदय' भी कहा जाता है।

2. बुद्धि - बुद्धि तार्किक ऊर्जा है जिसमें तर्क, विश्लेषण, निर्णय इत्यादि करने की क्षमता होती है। यह मन तथा कर्मेन्द्रियों को कन्ट्रोल करती है। यह इतनी महत्त्वपूर्ण है कि इसे राजा माना गया है।

3. संस्कार - संस्कार को ही अवचेतन मन (sub-conscious mind) भी कहा जाता है जो कि संकल्पों को, निर्णयों को, भावनाओं को प्रभावित करता है। ड्रामा में आत्मा का पार्ट संस्कार रूप में भरा हुआ है। संस्कार एक प्रकार की वीडियो

टेप है जिसके अनुसार आत्मा सेकेण्ड-दर-सेकेण्ड पार्ट बजाता है। आत्मा के संस्कार, गर्भ से ही कार्य करना शुरू कर देते हैं लेकिन कर्म में उस समय आ नहीं सकते इसलिए सिर्फ मन और बुद्धि के स्तर पर सक्रिय होते हैं। इसी सम्बन्ध में 'महाभारत' के 'अभिमन्यु' का उदाहरण दिया जा सकता है जिसने गर्भ में ही चक्रव्यूह रचने का ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

संस्कार में जो सूचनाएँ भरी होती हैं, उसी अनुसार शरीर का ढाँचा बनता है और उसी अनुसार आत्मा दूसरों के सम्बन्ध-सम्पर्क में आता है। एक बार परमधाम से इस सृष्टि रंगमंच पर आने के बाद आत्मा पुनर्जन्म के द्वारा अनेक नाम-रूप वाले शरीरों में पार्ट बजाता है और सृष्टि ड्रामा अथवा चक्र (5000 वर्ष) के पूरा होने पर ही वापस घर (परमधाम) लौटता है। वो समयावधि भी संस्कार में लिखी होती है कि कितना समय, कहाँ, कैसा पार्ट आत्मा को बजाना है। यह लिखा हुआ अविनाशी होता है और हर चक्र में हू-ब-हू रिपीट होता है। इसलिए हर बार (कल्प) आत्मा इस चक्र में सृष्टि पर परमधाम से उसी समय उतरेगा जिस समय पहले उतरा था। आत्मा इस चक्र में, अनेक मानव शरीरों में, (मनुष्यात्मा सिर्फ मानव शरीर लेती है, अन्य योनियों में नहीं जाती) भिन्न प्रजाति, भिन्न सभ्यता, भिन्न देश में जन्म लेता है ताकि जीवन के सभी पहलुओं का अनुभव करे तथा अपने ज्ञान और समझ को बढ़ाए। **हर जन्म में जो कर्म आत्मा करता है, उनका हिसाब-किताब बनता है। यह हिसाब-किताब एक ही जन्म में अक्सर पूरा नहीं हो पाता इसलिए हर जन्म में पिछले जन्मों का हिसाब-किताब भी चुक्ता होता रहता है।**

आत्मा मस्तिष्क के भीतर हाइपोथेलमस (hypothalamus), पिट्युटरी (pituitary) और पिनीयल (pineal) नामक अन्तर्स्राव ग्रन्थियों के बीच में बसा माना जाता है। आत्मा का स्थान बाह्य रूप से भृकुटी के बीच में कहा जा सकता है। इस स्थान से आत्मा सारे शरीर का संचालन कर सकता है क्योंकि स्नायुतन्त्र एवं अन्तर्स्राव ग्रन्थियाँ यहीं पर आपस में जुड़ते हैं। हाइपोथेलमस, पिट्यूटरी का नियन्त्रण करता है जो शरीर की अन्य सभी अन्तर्स्राव ग्रन्थियों का संचालन करती है।

हम जानते हैं कि मृत शरीर (बेकार जैविक यन्त्र) के विभिन्न भाग वैज्ञानिकों द्वारा जीवित शरीर को ठीक करने या मरम्मत करने में प्रयोग किए जाते हैं। कोर्निया, किडनी तथा हृदय इत्यादि का प्रत्यारोपण इसके उदाहरण हैं। ये सभी वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ केवल इसलिए सम्भव हैं क्योंकि जैविक ऊर्जा जो जीवित पदार्थों की वृद्धि और पुनरुत्पादन के जैविक कार्यों का पोषण करती है वह आत्मा की आध्यात्मिक ऊर्जा पर अनाश्रित है। अत: शरीर के अंग जैसे कि हृदय, आत्मा के बगैर कार्य कर सकता है परन्तु हृदय जिससे जुड़ा है वह पूरी हृदयवाहिका प्रणाली आत्मा के बगैर कार्य नहीं कर सकती। शरीर में विभिन्न अंग एक विशिष्ट प्रणाली के तहत अपना कार्य करते हैं जैसे श्वसन प्रणाली, उत्सर्जन प्रणाली इत्यादि। एक प्रणाली के सभी अंगों का समन्वय करने के लिए आत्मा की ज़रूरत है।

▲▲

मन का नियंत्रण

संकल्प शक्ति को सुरक्षित रखो, इसकी रक्षा करो। मन चंचल है, काबू में नहीं आता है, यह कहना ज्ञानवान को शोभा नहीं देता। योगी का अपने चित्त पर नियंत्रण होता है। उसकी मर्जी है, जो सोचना चाहे, जितना सोचना चाहे और जब सोचना चाहे - इसको मन का नियंत्रण कहा जाता है।

कुशंका से बचिए

– ब्रह्माकुमार योगेश भावसार, खरगोन (म.प्र.)

कई लोग किसी की बात सुनने से पहले उसके बारे में कई शंकाएं पाल लेते हैं और बात सुनकर भी शंका भरे बौद्धिक तराजू से तोलते हैं। जैसे सावन के अन्धे को सब जगह हरा ही नजर आता है, इसी प्रकार शंकालु व्यक्ति सीधी-सच्ची-उजली बातों पर भी अपनी शंका का रंग चढ़ाकर उन्हें काली कर लेता है और अन्दर ही अन्दर उलझता रहता है। इसी संदर्भ में एक कहानी है –

एक व्यक्ति को एक महात्मा जी के पास ज्ञान-चर्चा के लिए जाना था। महात्मा जी का आश्रम ऊँची पहाड़ी पर स्थित था जहाँ पहुँचने के लिए टेढ़े-मेढ़े, पथरीले रास्तों से गुजरना पड़ता था। वह व्यक्ति चलते-चलते तन और मन दोनों से थक गया। उसके अन्दर ढेर सारे प्रश्नों एवं उल्टी-सुल्टी बातों की झड़ी लग गई। वह सोचने लगा कि इस महात्मा जी को ऐसे निर्जन एवं उतार-चढ़ाव वाले रास्ते में ही आश्रम बनाना था, कोई और जगह नहीं मिली? जैसे-तैसे करके वह महात्मा जी के पास पहुँचा और अपने आने का उद्देश्य बताकर रास्ते भर सोचे गए सारे प्रश्नों की बौछार महात्मा जी पर कर दी। महात्मा जी मुस्कराने लगे एवं अन्दर जाकर एक गिलास एवं जग भर पानी ले आये। खाली गिलास को भरने लगे। पूरा भरने के बाद भी भरते ही रहे। वह व्यक्ति आश्चर्यचकित हो महात्मा जी को देखने लगा और बोला–'महाराज, यह गिलास तो भर चुका है, फिर भी आप इसे भरते ही जा रहे हो।' महात्मा जी ने कहा–"जिस प्रकार भरे हुए गिलास में और पानी नहीं भरा जा सकता है, ठीक उसी प्रकार पहले से ही व्यर्थ बातों से भरे मन में ज्ञान की बातें कैसे भर सकती हैं? ज्ञान समझने के लिए बुद्धि रूपी पात्र हमेशा खाली, शांत एवं निर्जन होना चाहिए।" वह व्यक्ति महात्मा जी का ईशारा समझ गया और उसने अपने दृष्टिकोण और आदत को बदलने का दृढ़ निश्चय कर लिया। उसके मन में महात्मा जी के प्रति सम्मान भाव जाग गया।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रति भी कई लोगों ने कहीं-कहीं से और किसी-किसी से यहाँ की गतिविधियों, ज्ञान, नियमों आदि के बारे में सुना होता है। वे पूरी बात और उसके पीछे छिपे रहस्य को तो जान नहीं पाते हैं और अधूरे सुने ज्ञान के आधार पर कई प्रकार की शंकाएं या धारणाएं बना लेते हैं। अगर कभी उन्हें ऐसा मौका मिलता भी है कि वे विद्यालय के बारे में विस्तार से जान सकें तो भी अपनी पुरानी शंका के कारण वंचित रह जाते हैं। कई दिन के बाद सत्यता का पता चलता है तो पश्चाताप करते हैं। जैसे कोई चिड़िया चोंच से सागर की अथाह गहराई को नहीं माप सकती, उसी प्रकार कोई व्यक्ति संसार के सभी क्षेत्रों का पूर्ण ज्ञाता नहीं हो सकता। इसलिए सम्बन्धित संस्थान के पूर्ण जानकार व्यक्ति से मिलकर शंकाएं मिटाने का प्रयास करना चाहिए या फिर बिना प्रमाण के यूँ ही ठीक या गलत धारणाओं को मन में स्थान नहीं देना चाहिए। सच्चाई को ही बुद्धि रूपी पात्र में डालें, अनुमान या शंका को नहीं। ▲▲

परमात्मा की इच्छा पर अपने को समर्पित कर देने वाला व्यक्ति सदा सफ़ल होता है। आप देखते हैं कि मुर्दा पानी में तैरता रहता है पर जिन्दा डूब जाता है। क्या क्षमता है मुर्दे में? कौन-सी विशेषता है उसमें? सिर्फ यही कि वह लड़ता नहीं वरन् नदी में अपने को छोड़ देता है। नदी में अपने को समर्पित कर देने के कारण मुर्दा तैरता रहता है। नदी से बचने का संघर्ष करने के कारण जिन्दा व्यक्ति डूब जाता है। ★

राजयोग द्वारा वेदनाएँ समाप्त हुईं

– ब्रह्माकुमार डॉ. दिगम्बर तुलसीराम टिकार, शान्तिवन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जो आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग सिखाया जाता है, उसके अभ्यास से मेरे जीवन में ऐसा परिवर्तन आया है कि बस 'जीवन सफल हो गया; जिसकी चाह थी, वह प्राप्त हो गया'। जीवन के सभी पहलुओं में आत्म-विश्वास, धैर्य और आत्मिक-स्नेह ने जगह ले ली जिससे उत्साह, आनन्द व खुशी आदि का अनुभव हुआ। संकल्पों में दृढ़ता आती गई और उन्हें क्रियान्वित करने का आत्म-विश्वास बढ़ गया। 'विचार और आचार श्रेष्ठाचारी बना कर ही रहेंगे' की धुन लग गई। अपना, अपने बच्चों का व समाज का जैसा चरित्र हम बनाना चाहते हैं, उसका प्रत्यक्ष स्वरूप इस प्राचीन ज्ञान और राजयोग के समझने एवं धारण करने से सामने आता है। यह एक ऐसा ईश्वरीय विश्व विद्यालय है जहाँ मनुष्य दिव्यत्व को प्राप्त करता है। ईश्वरीय स्मृति में रह कर कर्म करने से स्वाभाविक तौर पर हमारे कर्म श्रेष्ठ हो जाते हैं। निराशा आशा में परिवर्तित हो जाती है।

श्रीमद्भगवद्गीता में अगाध श्रद्धा

मेरा जन्म 30 अक्तूबर, 1934 में महाराष्ट्र राज्य के जिला अमरावती, तहसील दरियापुर के छोटे-से गाँव वरुड़ (बुजुर्ग) में एक किसान के घर हुआ। पिताजी साधुवृत्ति के थे। भजन, कीर्तन करते थे। 'महाभारत' के ड्रामा में वे द्रोणाचार्य की शानदार भूमिका निभाते थे। मेरी बड़ी बहन, शादी के बाद नागपुर में रह रही थी। मैं चौथी कक्षा उत्तीर्ण करके उनके पास चला गया। मैट्रिक तक उनके पास रह कर पढ़ाई की और फिर वस्तीगृह (हॉस्टल) में रह कर नागपुर कृषि महाविद्यालय से कृषि में स्नातक (B.Sc.) हो गया। भारत सरकार से मुझे 1952-1957 तक छात्रवृत्ति मिलती रही। बाल्यकाल से ही श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति अगाध श्रद्धा थी। उसे 'माँ' की तरह मान कर उसी से मार्गदर्शना लेता था और किसी भी परिस्थिति के आने पर उसी की ओर मुड़ता था। गाँधी जी और विनोबा जी मेरे लिए विशेष सम्मानीय नेता थे। सन् 1957 में जयप्रकाश नारायण जी
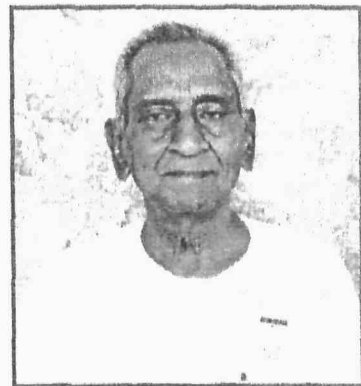
नागपुर विश्वविद्यालय में आए और उन्होंने भू-दान, ग्राम-दान अभियान में भाग लेने का आह्वान किया तो मैं इसमें कूद पड़ा और एक वर्ष तक लगभग 300 गाँवों में पैदल भ्रमण कर सेवा करता रहा। सन् 1960 में कृषि विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की और लेक्चरर पद पर सेवा करने लगा।

भूगोल, इतिहास का अनुसरण करता है

बाल्यकाल से ही, कुछ विशेष करने की प्रेरणा मेरे अन्दर बार-बार सिर उठाती रही थी। इसी प्रेरणा में मैंने राज्य की नौकरी छोड़ कर, डमडम हवाई अड्डे पर भारत सरकार के प्लांट क्वारन्टीन इन्सपेक्टर (आयात किए गए पौधों का निरीक्षक) के रूप में सेवाएँ दीं। अधिक पढ़ने की इच्छा हुई तो दिल्ली विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति (Ph.D.) की उपाधि प्राप्त की।
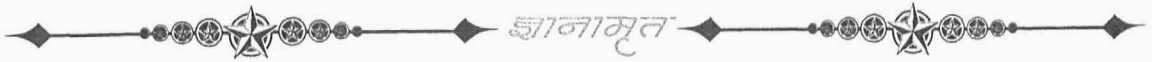
साथ-साथ रिसर्च इन्वेस्टिगेटर के रूप में सारे भारत में कीटों का सर्वेक्षण भी किया। एक दिन मैं देहली में प्रताप बाग जा रहा था तो रास्ते में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का एक संग्रहालय देखने में आया। जब मैंने उसे पूरी तरह देख लिया तो मुझे विचार लिखने को कहा गया। मैंने लिखा - 'यहाँ कुछ भी नया नहीं है, जो गीता में है वही यहाँ है, आप बहुत अच्छा कार्य कर रहे हो।' जिस भाई ने मुझे संग्रहालय के चित्र समझाए थे वह करीब एक मास बाद विश्वविद्यालय में आया और कहने लगा कि आप ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स करो। दोपहर के भोजन के लिए मिलने वाली छुट्टी के समय मैं कमला नगर जाकर चक्रधारी बहन जी से ज्ञान सीखने लगा। एक दिन मैंने एक प्रश्न पूछा - बहन जी, आप कहती हैं कि भारत का धन, जो विदेशों में चला गया है वापस लौट आएगा, यह कैसे होगा? बहन जी ने मुझे भ्राता जगदीश जी से मिलवा दिया। भ्राता जी के दो शब्दों ने ही मेरी दिव्य बुद्धि रूपी आइने को एकदम स्वच्छ कर दिया। उन्होंने कहा – '**History repeats itself. Geography will automatically follow.**' (इतिहास अपने को दोहराता है, भूगोल स्वतः उसका अनुसरण करता है)।

प्यारे बाबा के साथ का अनुभव

साकार बाबा के होते मैं ज्ञान का विद्यार्थी बन गया था और उनसे मिलने की तड़प भी मन में थी पर भावी के अनुसार 25 जनवरी, 1969 को ही मैं पहली बार मधुबन पहुँचा। जिस दिन मधुबन के लिए गाड़ी पकड़नी थी उस दिन सुबह मुझे निराकार परमात्मा शिव तथा आकारी ब्रह्मा बाबा के स्वरूप का अति सजीव तथा अलौकिक अनुभव हुआ। पाण्डव भवन के मुख्य द्वार पर पाँव रखते ही मन में आवाज गूँजी - "अभी तक तुम कहाँ भटक रहे थे, यहीं के रहने वाले हो तुम, यही घर है अपना।" मैं ज्ञान-मार्ग का नया-नया पथिक था उस समय। हर ब्रह्माकुमारी बहन को देख मुझे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना साकार में नजर आई। लगा कि यहाँ पढ़ाने वाला तो एक परमात्मा है परन्तु ये सभी शुभ्रवसना बहनें उस एक की पढ़ाई के साकारी वाहक हैं। मधुबन के हर कोने में, प्यारे बापदादा के आकारी रूप को मैंने अपने साथ-साथ चलते पाया। साथ की महसूसता के इस आकर्षण में बँध कर मैं हर दो या तीन मास बाद मधुबन आने लगा। मुझे पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त होने में उस समय केवल एक वर्ष बाकी था। मैंने डिग्री न लेने और अपने गृह जिले में जाकर ईश्वरीय सेवा करने का मन में विचार किया। बड़ी बहनों के शुभ संकल्प से जब सन्देशी बहन द्वारा यह बात बाबा से पूछी गई तो उन्होंने पी.एच.डी. पूरी करने और डिग्री लेने की श्रीमत दी।

सतोप्रधान परिवर्तन

लौकिक जगत में, एक किसान का लड़का होते हुए भी पी.एच.डी. होने से, लोगों की ओर से मुझे मान और प्रतिष्ठा भी प्राप्त थी लेकिन मैं स्वयं से सन्तुष्ट नहीं था। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में पढ़ाए जा रहे ज्ञान को समझने से गुणों की धारणा कैसे हो सकती है - उसको जान कर जीवन में सन्तुष्टता आई। 'काम' विकार बुरा है, दुःखदायी है, समझते-बूझते भी फिर-फिर इस दुःख में हम अपने को क्यों डालते हैं - यह समझ नहीं आता था। ईश्वरीय ज्ञान मिलते ही इस विकार को जीतने की शक्ति मिली और जीवन में शान्ति एवं सुख का अनुभव किया। अपने को ज्योतिर्बिन्दु आत्मा निश्चय करके व परमप्रिय परमपिता को बहुत स्नेह से परिचय-सहित याद करने से आत्मा स्वधर्म (पवित्रता, शान्ति) और स्वदेश को प्राप्त होती है। आत्माभिमानी ही षट् रिपुओं को जीत सकता है। जैसे-जैसे आत्माभिमानी व परमात्मा की याद का अभ्यास किया वैसे-वैसे कमल पुष्प के समान हल्का और सुगन्धित अनुभव किया।

आलस्य का त्याग हो गया, अमृतवेले उठ कर याद करने की विधि और इन्द्रिय सुख (जो फिर दु:ख में परिवर्तित हो जाता है) को त्याग करने की विधि आई। इन्द्रियातीत आत्मिक सुख, जिसके बारे में गीता में सिर्फ पढ़ा ही था, का अनुभव हुआ। शारीरिक दृष्टि से भी मुझे स्वास्थ्य लाभ हुआ। पहले कई शारीरिक वेदनाएँ थीं - जैसे दिमाग का गरम होना, बदन का दुखना आदि। इन्हें कभी-कभी डॉक्टर भी समझ नहीं पाते थे। जैसे-जैसे मैं राजयोग का अभ्यास करता गया, वेदनाएँ दूर होने लगी और आज मैं स्वस्थ अनुभव करता हूँ। सिगरेट का मुझे व्यसन-सा लगा हुआ था। पहले भी कई बार छोड़ने का प्रयत्न किया लेकिन छोड़ना और शुरू कर देना - यह क्रम चलता रहता था और मैं अपनी हार मान बैठा था। जब मुझे ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति हुई और समझ मिली कि हम दैवी-आत्माएँ हैं, सर्वशक्तिमान ईश्वर पिता की सन्तान हैं, सूर्य-वंशी राजकुल के हैं तब सिगरेट का व्यसन और अन्य तामसिक वस्तुओं का सेवन स्वत: ही बन्द हो गया और इस कारण 'कम खर्चा बाला नशीन' बन गए। समृद्ध जीवन अनुभव करने लगा।

इस विश्व विद्यालय द्वारा प्राप्त यह शिक्षा कि सृष्टि-चक्र एक बना बनाया खेल है, जो 'बीत गई सो बीत गई' इत्यादि पर मनन-मन्थन करने से दु:खों का हर्षित रूप होकर सामना कर सका और श्रेष्ठ कर्त्तव्य करने का उमंग उत्साह भी आया क्योंकि यह स्मृति भी आई कि इस नाटक में हमारा मुख्य पार्ट है। कल्प पहले भी हमने इन विकारों पर विजय प्राप्त की थी। इस प्रकार पुरुषार्थ की रफ्तार बढ़ती चली गई। फिर ज्ञान लेने के पश्चात् यह भी शिक्षा मिली कि ईश्वर का पैगाम सभी आत्माओं को देना है। अनेक आत्माओं की सेवा करने से, दु:खी आत्माओं का आशीर्वाद मिलने से वह खुशी प्राप्त हुई कि जिसका ठिकाना नहीं। सुनते थे कि खुशी जैसी खुराक नहीं परन्तु अब प्रत्यक्ष में अनुभव किया। जब ईश्वरीय सेवा का प्रत्यक्ष अनुभव किया तब आलस्य, थकावट, निराशा का जीवन से बहिष्कार हो गया। सर्व आत्माओं के प्रति भाई-भाई की दृष्टि होने से वृत्ति, कृति में भी परिवर्तन आया जिससे हमारे लिए सारी सृष्टि ही बदल गई और हमारी प्रवृत्ति पवित्र बन गई। ✦✦

सोनू की सीख............पृष्ठ 12 का शेष

काटने के लिए चल दिए। पेड़ पर ठक-ठक की आवाज होते ही सोनू बड़ी जोर से चीख पड़ा – "नहीं पापा! नहीं! ये पेड़ मत काटो।" उसके मम्मी-पापा हड़बड़ा कर उठ बैठे। "सोनू, सोनू! क्या हुआ बेटे तुम्हें? देखो मैं तुम्हारे पास हूँ।" "नहीं पापा, आप तो पेड़ काट रहे थे। प्लीज, पापा! आप पेड़ मत काटिए।" सोनू लगातार बड़बड़ाए जा रहा था। उसके पापा तो आश्चर्यचकित थे। आज उनका सोनू ये कैसी बातें कर रहा है! "सोनू, आज तुम्हें क्या हो गया है?" यह पूछने पर उसने सारी घटना कह सुनाई। सोनू ने बताया कि उसने इस बात को इतना महसूस किया कि उसे बुखार भी हो गया। उसके पापा ने तो कभी सोचा भी नहीं था कि सोनू इतना कुछ समझने लगा है। आज पहली बार उन्हें अपनी भूल का एहसास हो रहा था और वह भी अपने बेटे के द्वारा। पापा ने कहा – "सोनू बेटे, तुमने आज मेरी आँखें ही खोल दी। मैं आज के बाद कभी भी पेड़ों को नहीं काटूँगा बल्कि जितने पेड़ काटे हैं उनसे दोगुने पेड़ लगा कर अपनी भूल का प्रायश्चित कर लूँगा। सुबह होते-होते सोनू का बुखार बिल्कुल उतर चुका था। अब वह खुशी-खुशी तैयार हो रहा था स्कूल जाने के लिए। ▲▲

माँ जगदम्बा सरस्वती

– ब्रह्माकुमार रामलखन, शान्तिवन

वेद कहता है, माता निर्माता है। कुरान कहता है, माँ के कदमों तले जन्नत है। बाइबिल कहती है कि जो अपने माता-पिता को कोसता है उसका दीया बुझ जाता है। ग्रन्थ साहिब, माँ को ईमान मानता है। कहा जाता है कि अद्वैत जब द्वैत बनता है तो दो हो जाता है – एक माँ और एक बच्चा। माँ ही बच्चों में संस्कार डाल कर सीधी राह दिखाती है इसीलिए उसे प्रथम गुरु कहा जाता है। वेद व्यास ने तो उसे भूमि से भी गुरुत्तर बताया है। कहा भी गया है, पूत कपूत हो सकता पर माता कभी कुमाता नहीं होती। माँ जगदम्बा सरस्वती तो हर कसौटी पर खरी उतरी हैं। इस विश्वव्यापी ज्ञान यज्ञ की स्थिति कितनी भी नाजुक रही हो पर उनके ज्ञान-योग व सेवा भावना के आँचल को पार कर कोई भी कष्ट हम ईश्वरीय संतानों को सता नहीं पाया। उन्होंने तमाम चुनौतियों को स्वीकार करते हुए पिताश्री ब्रह्मा के साथ हम आत्माओं को दिव्य जीवन की अलौकिक अनमोल सौगात दी। माँ होना आसान नहीं, उसके हौसलों के आगे इंसान ही नहीं भगवान भी सिर झुकाता है। ऐसी ही थीं हमारी माँ जगदम्बा, ऊँ राधे।

परमपिता शिव, प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा कुछ गढ़ रहे थे। वहाँ से गुजरता हुआ एक फ़रिश्ता पूछ बैठा – निरन्तर कई दिनों से आप क्या बना रहे हैं? खुद भगवान ने जवाब दिया – नई सृष्टि के निर्माण के लिए मैं माँ को गढ़ रहा हूँ। जिज्ञासु फ़रिश्ते ने पूछा – कैसी माँ बनायेंगे? भगवान ने कहा – जिसकी अलौकिक कोख में देवत्व का जन्म हो। जिसकी दिव्य गोद में सारी सृष्टि समा जाये। जिसके स्नेहिल स्पर्श से बड़ी-से-बड़ी चोट पर मरहम लग जाये और पहले से भी ज़्यादा उमंग-उत्साह छा जाये। जिसका प्यार व दुलार सभी सदमों से उबार ले। जिसके दिखाई तो दें दो हाथ पर सारी सृष्टि को संवारते समय हज़ारों-हज़ार हो जायें। जिसके दिमाग के साथ दिल में भी आँखें हों जिससे वह सारे संसार में फैली हुई दिव्य आत्माओं पर उम्मीदों भरी नज़र रख सके। जो अस्वस्थ होने पर भी हर मुश्किल को आसान करने का दम रखे। जिसके आँचल तले सारी सृष्टि सुरक्षित रहे। जिसकी एक आँख में भावनाओं का शुभ जल भरा हो पर दूसरी से ज्वाला रूप शक्ति का भी संचार होता रहे। जिसके दर्शन से ही मानवता धन्य-धन्य हो जाये। मैं उसे गढ़ रहा हूँ जो ठेस पहुँचने पर भी दुआयें देती रहे और हाथ आशीर्वाद लुटाते रहें। शिव भगवान ने कहा कि मैं अपना ही प्रतिरूप रचकर शिव-शक्ति स्वरूप को नमन करना चाह रहा हूँ। तभी तो कहा है, ममता ने आकार लिया जिस कारण सारी सृष्टि माँ की हो गई। ऐसे मातृत्व को शब्दों में कैसे बाँधा जा सकता है? माँ के द्वारा ही पुरुष शिखर पर चढ़ सकता है। इसीलिए भारत माता और धरती को भी माता कहा जाता है।

हे प्यारी माँ, नयनों में स्नेह और होठों पर सुगबुगाहट लिए हम आपका साथ और सहारा चाह रहे हैं। कितना ही अच्छा होता कि आपकी सम्पूर्णता की साकार छत्रछाया हम पर बनी ही रहती। आँसुओं में डूबे संसार को स्वर्ग बनाने में आपका साकार सहयोग चाहिए। लाखों ब्रह्मा-वत्स आपके कदम-से-कदम मिलाने के लिए तैयार खड़े हैं। चमेली के फूलों जैसी श्वेतवर्णा, शरद पूर्णिमा के ओस कणों-सी शीतला, उज्ज्वल परिधानों और वीणा से शोभायमान, कमलासना आपके दिव्य स्वरूप से, कौन सौभाग्यवान नहीं बन पायेगा? हे विश्व वन्दनीया, जगत की आधार माँ, अपने सूक्ष्म स्वरूप द्वारा आप आज भी नव-निर्माण में सतत् प्रयत्नशील हैं।

जब सन् 1937 में खुद खुदा ने दादा लेखराज को अपना साकार माध्यम बनाया, उनके घरेलू सत्संग

में अपनी लौकिक माँ के साथ मम्मा आईं। वे जन्मजात दैवी गुणों व अलौकिक छवि से अलंकृत थीं। सत्संग में पहुँचते ही उन्हें बाबा में श्रीकृष्ण की झलक दीखी। उनके आने से ऊँ मण्डली को न जानने वालों को भी दिव्य साक्षात्कार होने लगे।

प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सत् ज्ञान की पहली किरण निकलते ही जगत जननी स्वरूप से वे सच्चा गीता ज्ञान सुनने व सुनाने लगीं थीं। उनकी सुयोग्य अध्यक्षता में शिव-शक्ति पाण्डव सेना का गठन होते ही वे बढ़-चढ़ कर आध्यात्मिक महाक्रान्ति में हिस्सा लेने लगीं। अदम्य साहस, अटूट श्रद्धा व विश्वास से वे मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में अन्त तक मुख्य भूमिका निभाती रहीं। राजयोग की जटिलता को मम्मा ने अपने जीवन द्वारा इतने सहज तरीके से प्रस्तुत किया कि बच्चे-बूढ़े-जवान, पढ़े-लिखे-अनपढ़े व भोली मातायें भी अपने को ईश्वरीय विश्व विद्यालय की योग्य विद्यार्थी समझने लगीं। ईश्वर प्रदत्त इस ज्ञान को उन्होंने धर्म-जाति, भाषा-देश से पार समूची मानवता के अनुकूल बना दिया। उनकी दृढ़ आस्था थी कि राजयोग के नित्य प्रयोग से ही सृष्टि का आमूल परिवर्तन हो पायेगा। इससे ही व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होगा। आज के विषयी व कुटिल समाज में रामराज्य की स्थापना इससे ही हो पायेगी। मम्मा पढ़ने के साथ-साथ नृत्य, संगीत, वादन आदि सभी कार्यों में प्रवीण थीं। पहली ही नज़र में भाग्यविधाता शिव बाबा ने उन्हें अविनाशी सम्बन्धों की जानकारी देनी शुरू कर दी। बुलाकर तुरंत पूछा कि पीताम्बरधारी से शादी करोगी कि कोट-पतलून वाले से? राधा द्वारा पीताम्बरधारी को वरने के लिए कहते ही बाबा ने उन्हें रूहानी पुत्री के रूप में स्वीकार कर लिया। जगदम्बा की अध्यक्षता में माता-बहनों की एक ट्रस्ट बना कर बाबा ने अपनी सम्पूर्ण चल-अचल सम्पत्ति उन्हें सौंप दी थी। संसार में कोई भी महिला किसी ट्रस्ट की उस समय तक संचालिका नहीं थी। बाबा ने इन आध्यात्मिक संचालिकाओं की बुद्धि में बिठा दिया कि आप ही धरा पर स्वर्ग उतारने के निमित्त हो। इसलिए अब सारे संसार को पवित्र और योगी बनाओ। दिव्य मूल्यों के बीजारोपण हेतु बाबा तन-मन-धन व सम्बन्धों से समर्पित हुए तो मम्मा मन-वचन-कर्म व श्वास-संकल्पों से।

विशाल हृदया माँ आदि-मध्य-अन्त को देखते हुए समस्याओं का समाधान देती थीं। समाने व सहयोग की बजाय बात फैलाने का उनमें संस्कार ही नहीं था। बाबा में इतना अटूट निश्चय रखती थीं कि असम्भव दीखने वाली उनकी बातों को भी सम्भव कर दिखाती थीं। रूहानियत के रूहाब से सदा भरी रहने के कारण जो भी समीप आता परम संतुष्टता का अनुभव करता था। छोटी उम्र होने पर भी सभी बड़े लोग भी उन्हें माँ कहकर पुकारते थे। यज्ञ-वत्सों की छोटी-सी खूबी को प्रकाश में लाकर ऊपर उठाती थीं। उनका ईश्वरीय स्नेह इतना अनूठा था कि बच्चे-बूढ़े-जवान सभी मम्मा कह उनकी गोद में समा कर बुराइयाँ भूल जाते थे। लौकिक से भी वे हज़ारों गुना प्यार-दुलार-सत्कार देतीं पर भेदभाव नहीं रखती थीं। वे माया की जंजीरों से ही मुक्ति नहीं दिलाती थीं पर ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार दिलाने में ही प्रयत्नशील रहती थीं। मधुरता व सत्यता से भरी उनकी वाणी जल तरंग की तरह सुखदायी लगती थी। स्मृति स्वरूपा होने से वे दिव्य लोक से आई हुईं परी मालूम पड़ती थीं। वे जन-जन पर अपना शुभ प्रभाव छोड़ती हुईं पवित्र और योगी बनाती रहीं। वे कहा करती थीं कि ईश्वरीय जन्म मिला ही है परमात्म-याद व त्याग-तपस्या-सेवा के लिए। चौबीस जून, सन् 1965 को राजश्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ की प्रथम मुख्य संचालिका ने अपना पुराना कलेवर बदल कर बेहद की सेवा में भाग लेना शुरू किया। ★★★

1.काठमाण्डु- जानकी मन्दिर के मठाधीश श्रीश्री1008 राम तपेश्वर दास वैष्णव जी, ब्र.कु. राज बहन का अभिनन्दन करते हुए । **2. गोवर्धन-** विधायक भ्राता पूरनप्रकाश को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. ज्योत्सना बहन । **3. जनकपुर (नेपाल)-** न्यायाधीश भ्राता दीपेन्द्र कुमार उपाध्याय को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. गंगा बहन । **4. नारायणगढ़ (नेपाल)-** वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करते हुए ज़िला न्यायाधीश भ्राता भोलाप्रसाद जी, ब्र.कु. राज बहन तथा ब्र.कु. लक्ष्मी बहन । **5. शामली-** समाज सेवी भ्राता रमेशचन्द गर्ग 'वृक्षमित्र', शामली ज्ञान-रत्न से ब्र.कु. राज बहन को सम्मानित करते हुए । **6. नानौता-** ज़िलाधिकारी भ्राता उमाधर द्विवेदी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सुरेश बहन । **7. सुन्दरगढ़ (उड़ीसा)-** पुलिस अधीक्षक भ्राता वाई.के. जेथवा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. विमला बहन । **8. लड़ूगाँव (उड़ीसा)-** व्यवसायी भ्राता मुरारीलाल अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. नीलम बहन । **9. दामनजोड़ी-** डॉ. भ्राता आर.एन. दास को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रह्लाद भाई । **10. कुश्मा (नेपाल)-** प्रमुख ज़िलाधिकारी भ्राता हुम प्रसाद अधिकारी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सुधा बहन । **11. जटनी-** वरिष्ठ मण्डल यान्त्रिक अभियंता भ्राता अतुल गुप्ता को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सुमन बहन ।

1. ब्रह्मपुर- सर्व धर्म सद्भाव स्नेह-मिलन कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं ज्ञानी भाई सुच्चा सिंह जी, गुरुद्वारा सिंह सभा, फ़ादर रोमन कैथोलिक चर्च, इमाम जामा मस्जिद तथा ब्र.कु. मंजू बहन। **2. काशीपुर (उत्तरांचल)-** आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. भ्राता प्रताप सिंह शाह, ब्र.कु. चन्द्रवती बहन तथा अन्य । **3. दिल्ली (कृष्णा नगर)-** रामनवमी झाँकी शोभायात्रा में प्रथम स्थान प्राप्त ब्रह्माकुमारी ई.वि.विद्यालय की झाँकी के मध्य सभी मन्दिरों के प्रधान, दादी कमलमणि जी तथा कलष वाली बहनें । **4. ज्ञानपुर-** कारागार में नियमित राजयोग कक्ष के शुभारम्भ अवसर पर उपस्थित हैं जेलर भ्राता कमलाकर उपाध्याय, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी बहन, जेल सुरक्षाकर्मी, कैदी भाई तथा अन्य । **5. उन्नाव-** मानसिक तनाव मुक्त जीवन कैसे जीएँ विषयक कार्यक्रम में उपस्थित हैं पूर्व राज्यमंत्री डॉ. भ्राता गंगाबख़्श सिंह, एम.एल.सी. भ्राता राजबहादुर सिंह, सिटी मजिस्ट्रेट भ्राता दीक्षित जी, ब्र.कु. शीलू बहन, ब्र.कु. विद्या बहन तथा अन्य । **6. चन्दौसी (उ.प्र.)-** आध्यात्मिक चित्र-प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विधायिका बहन गुलाबो देवी, उद्योगपति भ्राता श्रीराम अग्रवाल, बहन मीरा अग्रवाल तथा ब्र.कु. अलका बहन । **7. देवबन्द (सहारनपुर)-** स्वर्णिम युग निर्माण आध्यात्मिक चित्र-प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ज़िलाधिकारी भ्राता उमाधर द्विवेदी, पूर्व विधायिका बहन शशि बाला पूण्डिर, ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा अन्य। **8. गया (नूर कम्पाउण्ड)-** राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए एस.डी.ओ. भ्राता विजय कुमार श्रीवास्तव जी तथा ब्र.कु. शीला बहन ।
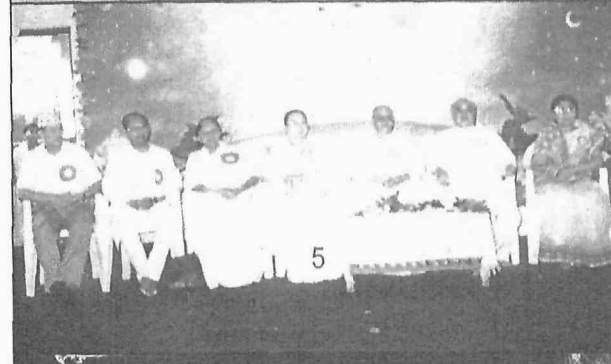
1. काकटपुर (पुरी)- आध्यात्मिक चित्र-प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उड़ीसा के कृषि मंत्री भ्राता सुरेन्द्रनाथ नायक । साथ में हैं ब्र.कु. बहनें तथा भाई । **2. आगरा (सेक्टर 7)**- आध्यात्मिक झाँकी का उद्घाटन करते हुए प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट चौ. भ्राता सुरेन्द्र सिंह जी, प्राचार्य भ्राता बी.के. अग्रवाल, ब्र.कु. विमला बहन, ब्र.कु. सरिता बहन तथा अन्य । **3. षड़ंगी (भुवनेश्वर)**- नि:शुल्क चिकित्सा शिविर तथा स्वास्थ्य मेले का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता सरोज कुमार सामल, अध्यक्षा बहन कुनि देहुरी जी, ब्र.कु. सविता बहन तथा ब्र.कु. मीनाक्षी बहन । **4. सम्बलपुर**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एम.सी.एल. के कार्मिक निदेशक भ्राता जी.डी. गुलाब, उत्कल योग विद्यालय के स्वामी सत्यबिन्दु सरस्वती, ब्र.कु. शीला बहन, ब्र.कु. पार्वती बहन तथा अन्य । **5. धरान**- समाज सेवियों के लिए आयोजित कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं समाजसेवी बहन सरला कायस्थ, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. गीता बहन, पूर्व सांसद बहन कुन्ता शर्मा, ब्र.कु. सूरत तथा एस.एस.पी. भ्राता कृष्ण बहादुर थापा जी । **6. तालचेर**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नगरपाल भ्राता पी. पट्टनायक, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य । **7. गोबरा (ब्रह्मपुर शान्तिकुण्ड)**- स्नेह-मिलन कार्यक्रम के पश्चात् सांसद भ्राता सुग्रीव सिंह, विधायक भ्राता विक्रम केसरी, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में । **8. बोकारो**- पारिवारिक मूल्यों द्वारा तनावमुक्त जीवन विषयक कार्यक्रम में विचार व्यक्त करती हुई ब्र.कु. मंजू बहन । साथ में हैं स्वास्थ्य तथा चिकित्सा निदेशक डॉ. भ्राता ओ.पी. अग्रवाल, ब्र.कु. कुसुम बहन तथा अन्य ।

1. देहली (सत्कार भवन)- योग साधना केन्द्र के साधकों को योगाभ्यास कराने के पश्चात् ब्र.कु. अनु बहन, ब्र.कु. स्वाति बहन उनके साथ समूह चित्र में । **2. सोनपुर**- होली पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए तहसीलदार भ्राता सुरेन्द्र कुमार बारिक, ब्र.कु. मामिना बहन तथा अन्य । **3. देहली (रामनगर)**- चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए निगम पार्षद भ्राता दिव्य जायसवाल, ब्र.कु. रतनी बहन तथा अन्य । **4. मुजफ्फरपुर**- आध्यात्मिक कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते हुए डॉ. भ्राता जे.पी. सिंह । साथ में हैं डॉ. भ्राता तिरेन्द्र किशोर तथा ब्र.कु. रानी बहन। **5. नवरंगपुर**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. नीलम बहन, गायत्री परिवार की बहन हेमलता माली, भाई राजशेखर तथा प्रह्लाद भाई । **6. बलगां (उड़ीसा)**- कार्यकारी अभियन्ता भ्राता के.सी. चौधरी तथा ब्र.कु. देवयानी आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए । **7. देहली (जनकपुरी)**- व्यापार संघ के सचिव को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. रुक्मिणी दादी जी । **8. गोलागोकर्णनाथ**- कोआपरेटिव अर्बन बैंक के अध्यक्ष भ्राता मूलचन्द वर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मालती बहन । **9. टिटिलागढ़**- विधायक भ्राता जोगेन्द्र बेहरा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. मंगला बहन । **10. कन्नौज**- विकास अधिकारी भ्राता एस.एस. मिश्रा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सुमनलता बहन ।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : bkatamad1@sancharnet.in (Ph. No. (02974)- 228125, 228124 shantivan@vsnl.com

1. इंदौर (वरदानी भवन)- मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता बाबूलाल गौर को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कुसुम बहन तथा ब्र.कु. रजनी बहन । **2. देहरादून**- उत्तरांचल के राज्यमंत्री भ्राता साधुराम जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मंजू बहन । **3. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)**- महिला प्रभाग के कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए पूर्व प्राचार्या बहन ए.एस.डावर, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. चक्रधारी बहन, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. सविता बहन, कार्यकारी निदेशक भ्राता रमेश सचदेवा तथा अन्य । **4. भुवनेश्वर**- वार्षिकोत्सव में मंच पर विराजमान हैं उत्कल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भ्राता खाकता चरन पण्डा, पूर्व मंत्री भ्राता अरविन्द ढ़ाली, 'उत्कल मेले' के सम्पादक भ्राता विजय कुमार जी, ब्र.कु. लीना बहन सम्बोधित करते हुए तथा दादी संदेशी जी । **5. जबलपुर (नेपियर टाउन)**- आध्यात्मिक संगोष्ठि में सम्बोधित करते हुए म प्र. उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति भ्राता उमेशचंद महेश्वरी जी । साथ में मंच पर आसीन हैं साहित्यकार राजेश पाठक प्रवीण, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति एस.एम. पाल खुरा , ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा ब्र.कु. भावना बहन । **6. सोजत सिटी**- राजस्थान के खनिज, वन व पर्यावरण मंत्री भ्राता लक्ष्मीनारायण दवे, विधायिका बहन लक्ष्मी बारूपाल, प्रधान बहन एकता जैन तथा अन्य के साथ ज्ञान-चर्चा करती हुईं ब्र.कु. आशा बहन तथा ब्र.कु. पद्मा बहन । **7. जयपुर (जगदम्बा कालोनी)**- राजस्थान के कृषि-डेयरी मंत्री भ्राता प्रभुलाल सैनी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. विद्या बहन । **8. राजपुरा**- सांसद बहन महारानी प्रनीत कौर को गुलदस्ता भेंट करती हुईं ब्र.कु. शान्ता बहन तथा ब्र.कु. कैलाश बहन ।

Regd.No. 10563/65,
Postal Regd. No. RJ/
WR/25/12/2003-2005,
Posted at Shantivan-
307510 (Abu Road) on
5-7th of the month.

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- मीडिया, समाज तथा मानवीय मूल्य विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम भ्राता के.एम. सेठ, राज्य की प्रथम महिला बहन वीणा सेठ, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु. मोहिनी बहन तथा अन्य ।

कटक- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उड़ीसा उच्च न्यायालय के वरिष्ठ विचारपति भ्राता आई.एम. कुदेशी, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, पूर्व मंत्री भ्राता अरविन्द ढ़ाली, भ्राता पी.के. सेनापति, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा ब्र.कु. सुलोचना बहन ।

आबू पर्वत- न्यायविद् प्रभाग तथा कला-संस्कृति प्रभाग के कार्यक्रम में शामिल भाई-बहनें समूह चित्र में ।